लोकगाथा : विवेचन

लेखक
श्री राजेश्वर झा
बिहार रिसर्च सोसाईटी, पटना-१

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान, पटना-१

लोक गाथा : विवेचन

लेखक

श्री राजेश्वर झा

बिहार रिसर्च सोसाईटी, पटना-१

प्रकाशक

मैथिली साहित्य संस्थान, पटना-१

मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस,
मुसल्लहपुर, पटना-६

विद्यापति-स्मृति-पर्व
२७ नवम्बर, १९७४ ई०

मूल्य : ४) टाका मात्र

सादर भेंट

लोकनायकक विशिष्टते तँ लोकगाथा मे सन्निहित रहैछ ! तदर्थ ई "लोक गाथा : विवेचन" लोकनायक डा० जगन्नाथ मिश्र केँ सादर भेंट !!

—लेखक

प्राक्कथन

लोक-गाथा स्पष्टतः दुई गोट शब्द लोक आर गाथा शब्द सँ बनल अछि। प्राचीन संस्कृत साहित्य मे लोक और वेदक किछु विभेदक ज्ञान प्राप्त होइछ। महाभाष्य मे लोक-वेद विधिक विरोधक प्रसंगक कतिपय स्थल जेना—वेदान्नोः वैदिकाः शब्दाः, सिद्धा लोकाच्च लौकिकः प्रिय तद्धिताच दाक्षिणात्या यथा लोके वेदे चेति प्रयोक्तकन्ये यथा लौकिके वैदिके विति प्रयुंजते—आदि वाक्य उपलब्ध अछि।

लोक-वेदक एहि प्राचीन अन्तर सँ प्रतीत होइछ जे वेद सँ बाहरक विषय लोक मे अछि। अतएव ओहि विषय केँ लौकिक कहल गेल।

मानव समाजक ओ वर्ग थिक जे आभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता तथा पांडित्यक चेतना अथवा अहंकार सँ शून्य रहि एक परम्पराक प्रवाह मे जीबैत रहैत अछि।

गाथा शब्दक इतिहास अधिकांशतः भाषाक दृष्टियें कथा वा कथ अर्थात् कहब धातु सँ सम्बद्ध अछि जकरा मे भाव, कथाक विषय-वस्तु तथा रसक प्रावल्य पाओल जाइछ। ई मूलतः वैदिक वस्तु नहि थिक। ई एक गोट अवैदिक तत्व थिक जकरा लोक जीवन सँ घनिष्ट सम्बन्ध अछि। अतएव लोक-गाथा मे मानव जीवनक समस्त तथ्य आच्छादित रहैछ। अतएव जीवनक सम्पूर्ण भावनाक अभिव्यक्ति एहि मे उपलब्ध होइछ।

लोक-गाथाक विशेषतः दुई गोट भेद (१) धर्म-गाथा और (२) लोक-गाथाक रूप मे उपलब्ध अछि। धर्म-गाथा मे धार्मिक पृष्ठभूमि रहैत अछि जकरा मे

कोनो ने कोनो देवी या देव पुरुषक समावेश रहैत अछि। एहि तरहक धर्म-गाथा मे राजा सलहेस, दीना-भदरी, विहुला आदि लोग-गाथाक स्थान अछि। लोक-गाथा लोक-मानसक मूल भावनाक रूप केँ स्थूल प्रतीक सँ अभिव्यक्त करैत अछि। अतएव चाहे धर्म गाथा रहौक वा लोक-गाथा एहि मे कथा तत्व तथा कल्पना तत्वक संग ऐतिहासिक तथ्यक सेहो समावेश रहैत अछि।

लोक-गाथा मे लोकगीतक अतिरिक्त किछु प्रबन्धात्मक गीतो रहैत अछि जकर रचना कोनहु विशेष घटना केँ लए पद्यबद्ध क्रम सँ कएल गेल अछि। एहि गीत मे लोरिकाइन, नैका बनिजारा, राजा सलहेस, दीना-भदरी, राजा गोपीचन्द आदिक गीत अबैत अछि।

भारत मे गीतक दुई गोट रूप अछि। पहिल रूप केँ स्फुट आर दोसर केँ प्रबन्धमय कहल जाइछ। सामान्यत: स्फुट अथवा मुक्तक रूपक स्वर गौरव केँ किछु विशेषता रहैत अछि। किन्तु प्रबन्धमय रूप मे शब्द-गौरव बढ़ि जाइत अछि। मुक्तक या स्फुट गीत मे अर्थ अथवा शब्द अथवा स्वर गौरवक रीढ़क काज करैत अछि और प्रबन्ध गीत मे स्वर शब्द के प्राण प्रदान करैत अछि।

लोकगीतक स्वर-साधना अपन प्रकृत संजीवित स्वर सँ सिद्ध होइछ तथा ताल-लय, आरोह-अवरोह एवं संवृत्ति-विवृत्ति आदि समस्त बन्धन स्वाभाविक मानवावेगक अनुकूल ढालल जाइछ।

एहि तथ्य केँ दृष्किोण मे राखि "लोक-गाथा : विवेचन" प्रस्तुत कएल अछि। एहि मे तावत पाँच गोट गाथा—लोरिकाइन, नैका बनिजारा, राजा सलहेस, दीना-भदरी और राजा गोपीचन्द केँ सन्निहित कएल अछि जकरा सभ मे कथा तत्त्व और कल्पना तत्वक अतिरिक्त ऐतिहासिक तथ्य सन्निहित अछि। एहि गाथा सभ मे विभाव, अनुभाव, एवं व्यभिचारी भावक उदाहरण जँ उपलब्ध अछि तँ संयोग-वियोगक मनोहर उद्गारो धरि सुलभ अछि जे अपन प्रकृत रूप मे पाओल जाइछ। अतएव एहि लोक-गाथा सभ मे लोकक मानसिक धरातल केँ, ज्ञानक उपक्रम केँ, तथा परिचयक क्षितिजक सीमाक आन्तरिक स्वर केँ गाथाकार लोकनि साकार कए ओकर उक्ति, भावना, तथा मान्यता केँ राग

एवं छन्द मे निरूपित एवं काव्य मे परिणत कए ऐतिहासिक सामग्रीक रूप मे प्रस्तुत कएलनि अछि जकरा सभ केँ युग-युगान्तर सँ लोक जोगौने अछि।

एहि लोक-गाथा सभहक सूत्रपात कहिया भेल यद्यपि ई कहब कठिन थिक किएक तँ एहि गाथाक कलेवर एक कंठ सँ दोसराक कंठ मे निरंतर जेबाक कारणे बदलैत गेल तथा गाथाक भाषा और विषय-वस्तु मे नवीनता अबैत गेलैक तथापि जेना कि लोक-गाथा पुरातत्वक एक अंग थिक तथा पुरातत्वक कतिपय अन्वेषणक आधारशिला और प्रेरणास्रोत लोक-गाथेँ केँ कहल जाइछ। अतएव लोक-गाथाक ऐतिहासिक तथ्यक विश्लेषणक निमित्त गाथाक मूल रूप के बुझब बड़ आवश्यक थिक किएक तँ ओहि मे ऐतिहासिक तथ्य ओझराओल अछि।

मैथिली जगत कृतज्ञ अछि डा० ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'क जे अपन लेखनी द्वारा लोक-गाथाक दिशि साहित्यकारक ध्यान आकृष्ट कएलनि अछि तथा आशावान अछि जे मणिपद्मजी एहि गाथा सभ मे सन्निहित ऐतिहासिक स्वरूप, नाम, घटना-चक्र, निर्माण-स्तर आदि केँ आँकबाक निमित्त अपन अनमोल ज्ञान केँ सीमाबद्ध नहिकए व्यापक बनेवाक हेतु एकर सभहक मूल रूप केँ प्रकाशित करेबाक प्रयास करताह।

मैथिली मे 'लोक-गाथा : विवेचन' नमूनाक क्रम मे प्रस्तुत कए रहल छी। एहि मे सँ प्रत्येक गाथाक पृथक-पृथक अध्ययन और विश्लेषणक आवश्यकता अछि।

अन्त मे विज्ञप्ति अछि जे विद्वान लोकनि हमर अल्प विषयामति सँ भौतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक तत्व केँ बुझवा मे जे त्रुटि रहल अछि ओहि दिशि ध्यान नहि दए केवल एकरा एक गोट प्रयास बूझि हमरा क्षमा करथि।

विद्यापति-स्मृति-पर्व
पटना, २७ नवम्बर, १९७४ ई०

—**राजेश्वर झा**

विषय-सूची

लोरिकाइन

लोरिकाइन[1] मैथिली लोक-कंठक एक गोट अनमोल रत्न थिक। एहि गाथाक नामकरण गाथाक मुख्य नायक लोरिकक नाम सँ सम्बद्ध अछि जकरा मिथिला मे "महराई" कहल जाइछ। "महराई" शब्दक सम्बन्ध ब्रजभाषाक प्रसिद्ध "महर" शब्द सँ अछि जे जमिन्दारी सूचक शब्द थिक। एहि शब्दक संबंध मध्यकालीन ब्रजक संस्कृति सँ अछि जकर उल्लेख सुरदास तथा गोस्वामी तुलसी दास एवंक्रमें कएलनि अछि :—

महर विनय दोऊ कर जोरे
घृत मिष्ठान पय बहुत मंगायो—सुर

तथा

ब्रज को विरह अरु संग महर को
कुवँरिही करत न नेक लजाने—तुलसी

प्राकृत एवं अपभ्रंशक कोष मे महर शब्दक यद्यपि उल्लेख नहि अछि तथापि ठेठ मैथिली मे एहि शब्दक परिवर्त्तित रूप मड़र प्रयुक्त होइत अछि जकर संबंध गामक प्रशासन सँ अछि। प्राय: ई शब्द ग्रामीण वा ग्रामपतिक विशेषणक अर्थ मे व्यवहृत होइत छल। महर मिथिलाक कपितय जाति मध्य प्रमुख व्यक्तिक विशेषार्थक उपाधि थिक जकर संबंध जातिक प्रधान व्यक्ति सँ अछि।

---

१. डा ब्रजकिशोर वर्मा माणिपद्म लोरिकाइनक गाथाक आधारपर 'लोरिक विजय' लिखलनि अछि तथा लोरिकाइन सँ संबद्ध हुनकर कतिपय लेख मिथिला-मिहिर मे क्रमशः प्रकाशित भेल अछि। वस्तुत: ई कार्य वड़ महत्त्वपूर्ण भेलनि अछि किन्तु जाबत पूर्ण गाथाक रूप समक्ष नहि अबैत अछि तावत लोरिकक प्रसंग मे यथार्थ रूपेँ किछु कहब कठिन थिक।

ऐतिहासिकता :

लोरिकाइन मे वर्णित धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक तथ्यक अध्ययन एवं विश्लेषण सँ प्रतीत होइछ जे एहि गाथाक संबंध ईसाक एगारहम शताब्दीक मिथिलाक अराजकता सँ अछि। हर्षक मृत्युक उपरान्त मिथिला तिब्बतीय, मौखरी पाल, गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट तथा चँदेलक क्रमिक आक्रमण सँ नष्टप्राय भए गेल।[1] संगठित राजतन्त्रक अभाव मे शक्तिशाली व्यक्ति लोकनि अपन पराक्रमक अनुसारें निर्धारित भू-भाग पर आधिपत्य स्थापित कए निरंकुश भए शासन करए तँ लगलाह किन्तु हुनका लोकनि मे पारस्परिक विद्वेष और शत्रुता छलनि। ओहि शासक मे सँ अधिकांश तँ एहेन व्यक्ति छलाह जे समयानुसार अपन राजभक्ति केँ बदलैत गेलाह। फलस्वरूप एक दिशि तँ हुनका लोकनिक स्वेच्छाचारिता बढ़ैत गेल और दोसर दिशि पारस्परिक ईर्ष्याक भावना शत्रुताक प्रचण्ड रूप ग्रहण कएलक।

ओहि युग मे जकरा जतेक पैघ पराक्रम छलैक ओकर स्थान समाज मध्य ओतबेक पैघ छल तथा समाज मध्य ओ ओतबेक एकवाली मानल जाइत छलाह। ओहि युग मे देश प्रशासनक सुविधाक निमित्त भुक्ति, मंडल, विषय और ग्राम मे विभाजित छल। मण्डल तथा विषयक अधिपति केँ माण्डलिक, मण्डलाधिपति, राय वा राजा कहल जाइत छलैक। मैथिलीक प्रसिद्ध मण्डल तथा राय शब्दक संबंध मण्डलाधिपति एवं राय शब्दहि सँ अछि। गामक अधिकारी केँ ग्रामपति, ग्रामिणी वा राजा कहल जाइत छल एहि मे सँ हर्दी (हौद्रेय) विषयक अगोरा गामक राजा महदेव, श्रीनगरक राजा मोचनी ग्रामपति छलाह जनिका लोकनि केँ लोरिकाइन मे राजा कहल गेलनि अछि। न्यौरागढ़क प्रतापी राजा हरबा-बरबाक राज्य हिमालय पहाड़ सँ गंगा-कात धरिक भू-भाग पर प्रसारित छल। ई लोकनि या तँ मण्डलाधिपति वा विषयपति छलाह जनिकर सैन्यशक्तिक प्रसंग मे लोरिकाइनक निम्नलिखित वाक्य अछि :—

---

१. डा० उपेन्द्र ठाकुर हिस्ट्री आफ मिथिला, पृष्ठ २१४

हिन हिन हिन हिन घोड़ा हिनकइ
हाथी करइ चिघांड़
अकुना मकुना के पतिआवे
सोलह सौ दन्तार ॥

लोरिकाइन मे वर्णित अनाचारी एवं अत्याचारी उघरा पँवारक संबन्ध मालवाक परमार राजपुतक एक गोट शासक सँ अछि जे एगारहम शताब्दी मध्य मिथिलाक भू-भाग पर शासन करैत छल होयताह। डा० उपेन्द्र ठाकुरक अनुसार मालवाक परमार कैलाश पहाड़ तकक भू-भाग पर शासन करैत छलाह। अतएव मिथिला पर भोजक शासन किछु दिन धरि अवश्य छल जे पश्चात कलचुरी कर्णक द्वारा निष्कासित भेल।[१] एगाहरम शताब्दीक[२] मध्य कलचुरीक कर्ण परमारक विनाशक भेलाह तथा हुनक मृत्युक उपरान्त यशकर्ण (१०७२-१११५ ई०)[३] जे हुनकर सुपुत्र छलाह चम्पारण तक बढ़ि कए आबि तँ गेलाह किन्तु मालवाक परमार सेनाक समक्ष ठाढ़ नहि रहि सकलाह।[४]

मालवाक परमारक सम्बन्ध मे महेन्द्रपाल द्वितीयक (९४६ ई०) परतापगढ़ अभिलेख सँ ज्ञात होइछ जे उज्जैनक शासक माधव छलाह। हुनकर पश्चात परमार वंशक सियाक हर्ष मालवाक शासन ९४९-९७३ ई० मध्य कएलनि। उदयपुर प्रशस्तिक अनुसार[५] सियाक हर्ष कोट्टिगक (राष्ट्रकूटक) सम्पदा केँ अपहरण कएल। बुहलर हुनका कृष्ण तृतीयक उत्तराधिकारी (९४०-९५५) मानैत छथि[६] जे ९५५-९७० ई०क मध्य शासन कएलनि। सियाक हर्षक उत्तराधिकारी वाक्पति मुञ्ज छलाह जनिकर समय ९७४-९९४ई० मानल जाइछ।

१. हिस्ट्री आफ मिथिला, पृष्ठ २२३
२. डी० सी० गाँगुली, हिस्ट्री आफ दि परमार डाइनेस्टीज, पृष्ठ १४५
३. ओतहि
४. ए० ई०, भा० ९, पृष्ठ १४६
५. ए० ई०, भा० १, पृष्ठ २३५ श्लोक १२
६. डा० वैजनाथपुरी, दि गुर्जरप्रतिहार, पृष्ठ ९९

उदयपुर[१] प्रशस्तिक अनुसार वाकपति मुंज कर्णाट, लाट, केरल, चोल तथा चेदि कें जीति राष्ट्रकूट सँ स्वतन्त्र भए गुर्जर-प्रतिहार सँ मालवा कें जीतल[२]।

गुर्जर-प्रतिहार तथा परमारक पारस्परिक शत्रुताक प्रसंग मे कहलक भामन-देवक क्रियाकलाप जे गुणवोधिदेवक पुत्र छलाह बड़ महत्त्वपूर्ण अछि।

पाल नरेश देवपालक संग युद्ध मे कलचुरी राजकुमार गुणवोधिदेव प्रतिहार भोज कें सहयोग दए गौड़ कें जीतल[३] तथा चात्सु अभिलेखक[४] अनुसार ओ गौड कें जीति अपन स्वामी कें अर्पण कएल।

गुणवोधिदेवक पुत्र भामनदेव जे प्रतिहार भोजक सहयोगी छलाह मालवाक परमारक संग युद्ध कएल।[५]

अतएव गुर्जर प्रतिहार तथा परमारक सम्बन्ध प्रारम्भ सँ विषाक्त छल तथा हुनका लोकनिक पारस्परिक विद्वेषक भावना बड़ प्रबल छलनि।

परमार एवं कलचुरी नरेशक पारस्परिक सम्बन्ध सेहो प्रारम्भहि सँ द्वेषपूर्ण छल। परमार नरेश वाकपति द्वितीय चेदी राज पर आक्रमण कए राजधानी त्रिपुरी कें नष्ट भ्रष्ट कएल। तत्कालीन शासक युवराज द्वितीय युद्धभूमि सँ भागि गेलाह तथा हुनकर पुत्र कोकल्ल द्वितीयक उत्तराधिकारी गांगेय विक्रमादित्य जनिक समय १०१९ सँ १०४२ ई०क मध्य मानल जाइछ बड़ प्रबल शासक भेलाक।[६] ओ गौड और तिरहुत कें जीति अपन प्रशासन मे सम्मिलित कएलनि।

---

१. इ० ए० भाग ६, पृष्ठ ५१
२. वैजनाथ पुरी, दि गुर्जरप्रतिहार पृष्ठ १००
३. ए० ई०, भा० ६, पृष्ठ ८८
४. ए० ई० भा० १२, पृष्ठ १३
५. वैजनाथ पुरी, दि गुर्जरप्रतिहार पृष्ठ ८७
६. डी० सी० गाँगुली, हिस्ट्री आफ दि परमार डैनेष्टीज, पृष्ठ १०१-१०३

अपन शासनक प्रारंभ मे ओ कर्णाट आक्रमणक हेतु परमार भोज तथा राजेन्द्रचोल सँ समझौता कएल किन्तु जयसिंह द्वितीयक द्वारा नष्टप्राय भेला सँ समझौता भंग भए गेल तथा कलचुरी और परमारक प्रारंभिक शत्रुता पुनः उत्पन्न भए गेल। कलवन अभिलेख तथा उदयपुर प्रशस्ति सँ ज्ञात होइछ जे परमार भोजक जबरदस्त विजय चेदी नरेश पर भेल तथा पारिजात मंजरी मे उल्लिखित अछि जे गांगेयक पराजय केँ उत्सवक रूप मे मनाओल गेल।

गांगेयदेवक पश्चात हुनकर पुत्र कर्ण १०४१-१०७२ ई० क मध्य शासन कएल। हुनकर राजत्वकाल में यद्यपि कलचुरी और परमारक बीच युद्ध चलिते रहल किन्तु परमारभोजक समक्ष हुनकर किछु नहि चलि सकलनि। कर्णक पश्चात हुनकर पुत्र यशःकर्ण १०७२-१११५ ई० मध्य राज्य कएल तथा चम्पारण धरि बढ़ि अएलाह।[१] अतएव निस्सृत होइछ जे चेदी नरेश तथा परमार राजा लोकनिक शत्रुताक निमित्त उवरा पँवारक प्रति लोरिकाइन मे अत्यन्त निम्न विचारधारा केँ अपनाओल गेल।

उपर्युक्त ऐतिहासिक तथ्यक अतिरिक्त गुर्जर प्रतिहारक संबंध पाल राजा लोकनिक संग सेहो शत्रुते पूर्ण छल। गोपालक पुत्र धर्मपालक राज्यारोहनक उपरांते (७०० ई०) राष्ट्रकूट तथा गुर्जरक संग पाल नरेश धर्मपालक युद्धाग्नि भड़कि उठल। धर्मपाल गुर्जर प्रतिहार वत्सराजक संग युद्धमे यद्यपि पराजित भेलाह किन्तु दैववशात ओ सम्हरि तँ गेलाह[२] किन्तु नागभट्ट द्वितीयक अधीन गुर्जर पुनः शक्तिशाली भेल तथा मुद्गिरी (मुँगेर) मे महिपालक संग युद्ध भेल।[3] धर्मपालक पुत्र देवपाल गुर्जर प्रतिहार मिहिर भोज केँ परास्त कएल। देवपालक पश्चात विग्रहपाल प्रथमक राजकाल मे पालक आधिपत्यक ह्रास भेल। विग्रह पालक पुत्र नारायण पालक समयक गया प्रस्तर अभिलेख, भागलपुर अनुदान अभिलेख, वादल स्तम्भ अभिलेख आदि सँ ज्ञात होयत जे बिहारक अधिकांश भू-

---

१. ए० ई० भाग २, पृष्ठ ११

२. डा० उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्री आफ मिथिला, पृ० २०५-२०६

३. ओतहि, पृ० २०७

भागक संगहि तिरहुत पर पालक आधिपत्य स्थापित भेल तथा अपन विजयक उपलक्ष मे मुद्गिरी स्कन्धावार सँ दान-पत्र जाड़ी कएल गेल सँ यद्यपि विहार एवं मिथिलाक पूर्वी भू-भाग पर पालक आधिपत्यक तँ पुष्टि होइछ किन्तु एकरा उपरान्त करीब ३७ वर्षक हेतु जे पालक शासनक पूर्ण अभाव खटकैत अछि ओहि सँ निस्सृत होइछ जे पालक राज्य लक्ष्मीक अवश्ये ह्रास भेलनि।

गुर्जर क्रमशः गंगाक उत्तरी भागक पूर्वांचल मे अपन आक्रमण केँ बढ़ौलक तथा महेन्द्रपालक राजत्वकाल मे सम्पूर्ण तिरहुत एवं वंगाल पर गुर्जर लोकनिक आधिपत्य स्थापित भेल।[1] अतएव एहि सँ निस्सृत होइछ जे मिथिलाक पूर्वी भाग अर्थात् भागलपुरक किछु भाग, सहर्षा, वेगुसराय तथा आधुनिक मधुवनी जिलाक उत्तरी तथा पूर्वी भाग मे पाल और गुर्जर लोकनिक सत्ताक संघर्ष ईसाक नवम सँ एगारहम शताब्दी मध्य जाड़ी छल जकर स्पष्ट दिनदर्शन लोरिकाइनक गाथा मे उपलब्ध अछि। प्रतीत होइछ जे लोरिकाइनक सम्बन्ध गुर्जर प्रतिहार सँ छल जकरा बौद्ध पाल तथा मालवाक परमार राजा लोकनि सँ विद्वेष छलैक। गांगेय क्षत्रिय जे लोरिक केँ करियनक कर्ण कुम्हारक अस्सी मोनक चाकक चाप सँ रक्षा कएल ओ अवश्ये परमारक शत्रु कलचुरी गांगेय विक्रमादित्य छलाह जनिकर पूर्वज पूर्व काल मे सेहो गुर्जर प्रतिहार भोजदेव केँ देवपालक संग युद्ध मे सहयोग देने रहथिन। गांगेय प्रायः मालवाक परमार भोज सँ हारि अपन पुत्र कर्ण केँ राज्य दए गंगाकात तपस्या कए रहल छलाह जेना कि लोरिकाइन सँ ज्ञात अछि।

गांगेयदेवक मृत्युक प्रसंगक एक गोट ताम्रपत्र[2] सँ ज्ञात होइछ जे हुनकर मृत्यु प्रयाग मे भेल। हुनकर वर्षीक उपलक्ष मे हुनक पुत्र कर्णदेव द्वारा वेसाल ग्राम विनिर्गत पंडित विश्वरूप केँ सुसी ग्राम केँ दान देवाक प्रसंगक उल्लेख अछि जे १०४२ ई० क थिक।

---

१. ओतहि, पृ० २११

२. ना० प्र० प०, भा० ११, पृ० ४४०-४१

गांगेयदेवक प्राय: अपन अन्तिम समय जेनाकि वर्णाश्रमक अनुसार प्रधानत: लोक बितवैत अछि प्रयाग सेवन मे बितौलनि। ओतहि हुनक एक सहस्र रानी रहैत छलीह। कदाचित ओलोकनि त्रिवेणी मे पतिक संग सती भए जीवन मुक्ति करवाक प्रतिक्षा में ओतए छलीह जकर पुष्टि एहि श्लोक सँ होइत अछि:——

प्राप्ते प्रयागवट मूल निवेशवंधौ
सार्द्धं शतेन गृहिणीभिरमुत्र मुक्तिम्।
पुत्रोऽस्य खड्ग दलितारिकरींद्रकुंभ
मुक्ताफलैः स्म ककुभोऽर्चति कर्णदेव:

अतएव परमारक शत्रु लोरिक कें गांगेय देव सँ सहयोग प्राप्त करब स्वभाविके छल जे उघरा परमारक विरुद्ध मे अपन खड्ग कँ चमकौने छलाह। लोरिकाइन सँ ज्ञात होइछ जे परमार तथा हरबा-बरबाक वीच राजनैतिक समझौता छल किएक तँ लोरिक जखन न्यौरागढ़क युद्ध मे छलाह तँ ओतए उघराक छोट भाय घुघरा पँवार सँ लोरिक के युद्ध भेल। एहि सँ प्रतीत होइछ जे गांगेय क्षत्रिय जे लोरिक कें हरबा-बरबाक विरुद्ध मे सहायता कएल ओहु मे राजनीतिये आधारस्वरूप छल। एकरे अतिरिक्त कोलभकड़ाक तात्पर्य कोनो कोल राजा सँ अछि जे प्राय: आधुनिक कोइलाही (सप्तरीक) मोचनी छलाह और सहदेवक सम्बन्ध सम्भवत: पाल सँ छल। अतएव गुर्जर प्रतिहार जे कन्नौजक छलाह तथा मिथिलाक भूभाग पर अपन आधिपत्य स्थापित कए किछु दिनक हेतु शासन कएल पालक शासनक पुनर्स्थापनाक उपरान्त अपन संघर्ष कें जाड़ी राखि पालक सहयोगी राजा लोकनि कें भगवती प्रदत्त खंडाक धार सँ धमान करब समीचीने छल।

उपर्युक्त तथ्यक विश्लेषण सँ निस्सृत होइछ जे लोरिकाइनक कथावस्तु सँ जे ऐतिहासिक गंध बहराइत अछि ओहि सँ कोनो वर्ग वा वर्ण विशेषक तात्पर्य नहि भए विशुद्ध राजनैतिक छल। जहाँधरि एहि मे वर्णित धार्मिक विचार सँ अछि पाल राजा लोकनि बौद्ध छलाह, कलचुरी शैव और गुर्जर

प्रतिहारक सम्बन्ध ब्राह्मण धर्मक द्वारा वर्णाश्रमक प्रतिपादन सँ छल जकर दिग्दर्शन लोरिकाइनक कतिपय स्थल पर उपलब्ध होइछ।

भौगोलिक स्थिति :

लोरिकाइनक गाथाक अनुसार मिथिलाक भौगोलिक सीमा निर्धारित छल पूर्व मे पुर्णिया, उत्तर मे हिमालय पहाड़, दक्षिण में गंगा नदी और पश्चिम मे ओदन्तपुरी विहार। एहि अनन्तरक भूभागक सम्बन्ध लोरिकाइनक गाथा सँ अछि जाहि मे सँ किछु स्थानक चर्चा कएल जाइछ। हारदीक वर्णन पालक अभिलेख में हौद्रेय विषयक रूप मे उल्लिखित अछि। लोरिकाइन मे हरदीक अधीनक अगौरगामक राजा सहदेवक चर्चा आयल अछि। अगौरा गाम हरदी सँ चारि मील पश्चिम सहर्षा जिलाक एहि गाम सँ करीब एक मील पूर्व देवहा धार बहैत छल जकरा घोड़दह सेहो कहल जाइत छलैक। आब ई धार कोशिक गर्भ मे विलीन भए गेल। एहि गाँव मे हेमनि धरि एक गोट राजाक डीह छल जकर सम्बन्ध राजा सहदेव सँ छल जे आव कोशीक द्वारा नष्टप्राय भए गेल। हरदीक पहचान हरदी चौघाड़ा सँ कएल जाइछ। एतए लोरिकक भगवतीक थान छल जे आव प्राय: कोशी द्वारा नष्ट भए गेल। भगवती अहुखन ओहि गाम मे सुरक्षिते छथि। ई स्थान सहर्षा जिलाक सुपौल उपप्रमण्डलान्तर्गत अछि। श्रीपुरक राजामोचनीक जे चर्चा अछि ओकर सम्बन्ध सीरीपुर सुरवासिनी गाम सँ थिक। ई गाँव हरदी सँ करीब चारि मील पर अछि।

हरबा-बरवाक न्यौरा गढ़क सम्बन्ध मधुवनी जिलाक लौकही थानाक न्यौर गाँव सँ अछि। एहि गाम मे अहुखन एहि राजाक गढ़क भग्नावशेष सुरक्षित अछि। एहि गाँव सँ २ मील पर हथरी गाम अछि जकर पहचान हथरी वनिसार सँ कएल जाए सकैछ। न्यौर सँ करीब तीन मील पर नारो खढ़होरि अछि जकरा ओहियुगक नरसरि खढ़होरि थिक। न्यौर गाँवक समीपे देवहा धार अछि जे घोड़दह सेहो कहल जाइछ। न्यौर गाँव सँ तीन मील दक्षिण दुहवी सुहवी पोखरि छल जकरा रानी पोखरि एवं सौतिन पोखरि सेहो कहल जाइत छल।

ओहि दुहु पोखरिक जल एक दोसरा मे हवाक अनुकूल जाइत-अबैत रहैत छल। ओ दुहु पोखरि जे आब कोशीक द्वारा मृतप्राय अछि हरबा-वरबाक दुहु अनंग यौवना प्रेयसी "दुहबी और सुहबी" स्मारकस्वरूप छल जकर सौंदर्य-सुषुमाक प्रसंग मे लोरिकाइन मे एहि तरहें कहल गेल अछि :—

केड़ा के बीर सन छह-छह देह,
मधुसन वर्ण घोड़ीक आँखि सन नयन
दुपहरिया फुल सन रक्तिभ गाल,
पान सन पातर ठोर, गज गण्ड सन उरोज,
आ आसव सँ भीजल अधर पर आतुर मुस्की,
विपुल नितम्व पर मणि मेखला ऊपर निचा होयत,
आ केशक लट-लट मे गूहल मोती जगमग करैत।

न्यौरा गाँवक समीपक वाजुवन गाँव लोरिकाइनक बिजुवन थिक जे किरणछवि मौ 'माने चौकक आकाश तारा पटोर' तथा 'मानिक चोलोक क्रय विक्री' मे प्रख्यात छल।

लोरिकाइनक उघड़ा गाँवक सम्बन्ध दरभंगा जिलाक उघरा सँ अछि, एहि गाम मे अद्यावधि उघरा पँमारक गढ़क भग्नावशेष प्राप्त अछि तथा गौरा गाम एही गामक समीपे अछि। जेम्स टाडक अनुसार परमारक मोड़ी, सोड़ा, संकल, उमरा-सुमरा, विहिल, महिसावत, वलहार, कावा, ओमता और खैर आदि बारह गोट प्रशाखा छलैक। उघरा गामक समीपक खैरा और ओमता गामक सम्बन्ध परमारक खैर एवं ओमता शाखाहिक नाम सँ अछि।

एहि सभहक अतिरिक्त लोरिकाइन मे वर्णित जतेक स्थान-नदी एवं आन-आन नाम सभ अछि ओ सभक सभ ऐतिहासिक थिक तथा ओकरा सभहक सम्बन्ध ओहि युगक भूगोल सँ अछि जकरा कपोल कल्पित मानब नितान्त अनर्गल थिक।

तंत्रक प्रभाव :

लोरिकाइन मे वर्णित ठाम-ठाम तंत्रक प्रसंग मे जे उल्लेख अछि ओहि सँ मिथिलाक लोक-धर्म पर यद्यपि वज्रयानक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होइछ किन्तु

ओहि मे बौद्धधर्मक अभाव प्रतीत होइछ लोरिकाइनक अनुसार जखन देश मे सर्वत्र शान्ति स्थापित भए गेल तँ लोरिक भगवती प्रदत्त खाँड के देवहाघार मे फेकि अपन धर्मपत्नी माँजरि और प्रेयसी चनैनकेँ भैरवी और स्वतः भैरवक रूप मे वसहा पर चढ़ि वर्णाश्रमक परम्पराक निर्वाहक हेतु काशीक यात्रा कएलनि।

भारतीय संस्कृति मे भैरवक स्थान वड़ विशिष्ट अछि। भैरव घोर भावना केँ प्रकट करैत अछि। शिवपुराणक अनुसार भैरव शंकरक पूर्ण रूप थिकाह तथा जकर बुद्धि माया सँ परिवेष्टित रहैछ ओ शिवक एहि रूपक विशिष्टता केँ नहि आँकि सकैछ। विश्वक भरण (रक्षा) करबाक हेतु तथा अपन भीषण (भयानक) रूपक निमित्त शिवक एहि रूपक नाम भैरब भेल। हिनका काल भैरव सेहो कहल जाइछ किएक तँ कालोधरि हिनका सँ त्राषित रहैछ ई आमर्द्दक थिकाह, दुष्ट केँ मर्द्दन करैत छथि तथा पापभक्षण करैत छथि। अर्थात् ई अपन भक्तक सभटा पाप केँ भक्षण कए जाइत छथि। हिनक निवास स्थल काशी थिक।[1]

घोरकर्मक निमित्त महाविघ्नाक घोररूपक तथा क्रियाक आवश्यकता होइछ तथा शान्तकर्मक हेतु शान्तरूप और शान्तप्रद क्रियाक। महाशक्तिक भैरवीरूप, जप-तप एवं ज्ञान-ध्यान इत्यादि शान्तिकर्म मे सिद्धिप्रद अछि।[2]

भैरवीक अरुणवर्णकक साकार रूप विमर्श थिक। मुण्डमाला वाक् अर्थात् वर्णमाला थिक। रक्तलिप्त पयोधर सृष्टि और स्थिति थिक। रक्त, रजोगुण अर्थात् सृष्टि-क्रिया थिक तथा स्तन, पालन-पोषण केनिहारि सत्वगुणात्मक स्थिति थिक। जपवटिका वाक्क मोक्षदायक अन्य रूप थिक। ब्रह्मज्ञानक प्रतीक हाथक पोथी थिक। त्रिशक्ति (ज्ञान, इच्छा, क्रिया) ओ त्रिज्योति त्रिनेत्र थिक। मुकुटक चाँद, वेदक सोम, आनन्द और अमृत तत्व थिक। मन्दस्मित, शाक्त और शैवक इच्छा क्रिया, वेदान्तक आनन्द तथा वौद्धक करुणा थिक।

१. टी० ए० गोपीनाथ राव, एलीमेन्ट्स आफ हिन्दू एक्नोग्राफी, अंक २, भा० १, पृ०, १७६-७७.

२. डा० जर्नादिन मिश्र, भारतीय प्रतीक विद्या, पृ० २३६-३७

सनातनक अनुसार भैरवीक सूक्ष्मरूप वाक्‌क अधार तथा जगतक मूलरूप थिक तथा वौद्धक अनुसार ई करुणाक सागर थिकीह ।[1]

लोरिकाइन मे वर्णित सातवहिनी जे दूर्गा कें कहल गेल अछि एहिसँ सप्तमातृकाक तात्पर्य थिक । मार्कण्डेय पुराण (अध्याय ८८) मे सन्निहित अछि जे चण्डिकाक सहायताक हेतु सप्तमातृका वा सप्त योगिनीक उत्पत्ति भेलनि । ऋग्वेदक सात वहिनी सँ हिनकर समता कएल जाए सकैछ । सूक्ष्म विचार कएला सँ मूलशक्तिक सात गोट भिन्न-भिन्न रूप ई सातो देवी— ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नरसिंही एवं चामुण्डा थिकीह ।

सप्तमातृकाक प्रसंग मे ब्रह्मपुराण तथा कूर्मपुराण मे वृहद वर्णन अछि । एहि सँ ज्ञात होइछ जे सप्तमातृके सँ रक्तवीजक वध भेल । वाराहपुराण तथा कुर्मपुराणक अनुसार अन्धकासुर विनाशक हेतुए सप्त मातृकाक उत्पत्ति भेल । वाराहपुराणक एक स्थल पर कहल गेल अछि जे अंधकासुर एवं मातृका उपाख्यान तँ रूपात्मक थिक जेकर तात्पर्य आत्मविद्या द्वारा अंधकारक संग्रह युद्ध सँ अछि सुप्रभेदागम मे कहल गेल अछि जे नृतकें मारवाक निमित ब्रह्मा एहि सप्त मातृकाक सृजन कएलनि ।

लोरिक और हुनकर छोट भाय सावरक भगवतीक समक्ष संकल्प छल अवला, गाय और लोकक रक्षा करब। अराजकताक अवधि मे मत्स्य न्याय सर्वत्र प्रचलित छल । आसुरीवृत्ति लोकक सात्वकी वृत्तिकेँ हरि लेने छलैक । अतएव दूर्गा अथात् शक्तिक सात रूपक लोरिकाइन मे कल्पना कएल गेल जकर सर्वप्रथम दिग्दर्शन मार्कण्डेयपुराणक देवी माहात्म्य मे भेल अछि जे ब्रह्मा, महेश, कार्तिकेय (कुमार), विष्णु, वाराह, इन्द्र तथा यमक सम्मिलित शक्तिक द्वारा भेल जकर उपयोग उघरा पमारक अनाचार एवं अत्याचार मोचनीक अविवेक. तथा हरबा-बरबाक निरंकुशताक प्रतिरोध मे कएल गेल । अतएव लोरिकाइनक गाथा मे सन्निहित तांत्रिक तथ्यक निरूपणक आधार पुराणे थिक तथा एहि तथ्यक

१. ओतहि, पृ० २३७

विश्लेषण सँ निस्सृत होइछ जे पालक आधिपत्यक संगहि बौद्ध धर्मक ह्रास भेल तथा ब्राह्मण धर्मक प्रभाव समाज मध्य पुनः स्थापित भेल। जँ ओहि युग मे बौद्ध धर्मक प्रभाव रहैत तँ लोरिक भिक्षु तथा अपना पत्नी और प्रेयसी केँ भिक्षुणी बनाए "बुद्धं शरणं गच्छामि। संघ शरणं गच्छामि" वाक्य केँ साकार करैत कोनो बौद्ध विहार मे प्रश्रय लितथि। एकर अतिरिक्त लोरिकक छोट भाय सावरक वीरगति प्राप्त भेला पर हुनकर धर्मपत्नी सती-साध्वी मैनावती कोनो बौद्ध विहारक शरण नहि लए शास्त्रानुसार सोलहो सिंगार कए अपन पतिक मस्तक केँ कोहा मे लए सती भए गेलीह। एहिसभसँ निस्सृत होइछ जे लोरिकाइन मे जे प्रचलित धार्मिक तथ्य अछि ओकर सम्वन्ध पूर्णतः धर्मशास्त्रसँ अछि।

लोरिकाइन मे वर्णित मालिन कोसाक तान्त्रिक प्रक्रिया मिथिलाक लोक-जीवन मे अहुखन ओहिना गाओल जाइछ। ताग मे सुई खोसवाक परम्परा समाज मध्य बड़ प्राचीन अछि। तान्त्रिक प्रक्रिया मे बिलाय, पशु—पक्षी आदिक प्रयोग बाटी हाँकबाक रूप मे एहुखन धाइम एवं तन्त्राचार लोकनिक द्वारा होइत अछि जकर उद्‌भवक श्रेय वज्रयान केँ छैक। जहाँधरि मालिन कोसाक आचरणक प्रसंगक प्रश्न अछि एहि पर वज्रयानक पूर्ण प्रभाव पाओल जाइछ। सम्भवतः कोसा ओहि युगक कोनो प्रख्यात वज्रयोगिनी रहलि होथि जनिका प्रसंग मे लोरिकाइन मे एवंक्रमे कहल गेल अछि :—

"नीलवर्ण आसनपर अगिन वर्ण कोसा मालिन पीतवसन पहिरने बैसल छथि। लगैक जेना ओ स्वयं पुण्यमयी हो। केराक नव कोसासन उरोज, तिल-फूल सन नाक, मधुरी फूल सन ठोर, दाड़िम फूल सन गाल आ नील अपराजिताक फूल सन आँखि छलैक आ लट ओकर अरुझायल छलैक। मालिन कदम्ब आ रुद्राक्षक माला पहिरने छलीह। ओकर दिठठ लगैक जेना हुलकी दऽ कऽ कोंढ़ करेज देखि रहल हो।"

उपर्युक्त वाक्य मे नील आसन, अग्निवर्ण पीत वसन, कदम्ब और रुद्राक्षक माला आदि शब्दक तान्त्रिक अर्थ बड़ व्यापक अछि। साधनमाला मे ताराक

जांगुली, पर्णशवरी, महाचीन तारा, एकजटा इत्यादि कतिपय नामक उल्लेख पाओल जाइछ।

प्रो० फौचर[1] रंगक आधार पर विभिन्न वर्गंक ताराक प्रसंग मे कल्पना कएलनि अछि। हुनकानुसारे नील तारा, श्वेत तारा, पीत तारा, रक्त तारा आदि ताराक भिन्न-भिन्न वर्ण अछि।

अग्नि वर्ण कोशाक पीत वसन सँ तात्पर्य पीत ताराक अर्थात् वज्रतारा सँ अछि जनिकर जांनगुली, पर्णशवरी, भ्रकुटी तथा प्रसन्नतारा आदि भेद अछि। तारा मन्त्र मे एहि वर्णक तारा केँ अमृतमुखी तथा अमृतलोचना कहल गेल अछि[2] जनिकर स्वरूप मनोहर तथा आचरण शान्त और सुखद छनि। कोशाक पीतवसनक तात्पर्यं एहि सँ अछि।

कोशाक नील वर्णक आसन सँ तात्पर्यं नीलतारा सँ अछि जनिका महाचीन तारा तथा उग्रतारा सेहो कहल जाइछ। एहि ताराक वर्ण नील छनि। हिनकर गराक रुद्राक्ष मुण्डमालाक बोधक थिक। वस्तुतः अनायासे वाक्प्रदान करबाक हेतु ई नीलतारा, अग्रहेवाक कारणे उग्रतारिणी तथा भयंकर विपत्ति सँ रक्षा करबाक निमित्त हिनकर नाम अग्रतारा भेल।

ताराक सिद्धान्त और स्वरूप केँ बौद्ध एवं जैन सनातने सन ग्रहण कएलनि।

लोरिकाइन मे वर्णित श्नानो-आन दार्शनिक तथ्यक सम्बन्ध तन्त्रे सँ अछि जे मिथिलाक लोकजीवन मे पूर्ण रूपें परिव्याप्त पाओल जाइछ।

मानव जीवन केँ संग्रामक रूप देवाक परिपाटी बड़ प्राचीन अछि। जीवन एक संग्राम थिक। जीवक उद्भव और अन्त दुहुक श्रेय संग्रामे केँ छैक जकरा प्रणय काल और प्रलय काल कहल गेलैक अछि। प्रणयकालक सम्बन्ध मनुष्यक उद्भव सँ अछि जकरा "रति संग्राम" कहबाक परम्परा बड़ पुरान अछि।

---

१. विनयतोष भट्टाचार्य, दि इण्डियन बुद्धिष्ट एक्नोग्राफी, पृ० १३५।

२. ओतहि, पृ० १३८

रति कें मुख्य रूप सँ तीन गोट भेद अछि जकरा अन्तर्गत रति, विपरीत रति और रति-रण अबैत अछि। आलिंगण, चुम्बन, नख-दंत क्षत, प्रहनन, संबेशन आदि मे उत्पीड़नक भावना रहैत अछि जकर सम्बन्ध रति-रण सँ थिक। पशु जगत मे प्रणय यद्यपि केलि थिक किन्तु ई केलि रणक रूप धारण करैत अछि। पुरुषक वासनात्मक तृप्ति मे बाधा और बिलम्ब द्वारा स्त्री साधारणतः पुरुष कें उत्तेजित करैत अछि जाहि सँ ओकरा आत्मतुष्टि होइछ। प्रसिद्ध काम शास्त्री हेवलक एलिस प्रणय-केलि मे स्त्री कें मृगया मे पाछु कएल जाइत पशु सन मानलनि अछि किन्तु एहि मे अन्तर ई अछि जे, मृगया मे पशु अपन रक्षाक निमित्त शिकारी सँ बचबाक इच्छा करैत अछि और स्त्री पुरुष कें थकाए अन्त मे स्वतः आत्मसमर्पण करैत अछि । अतएव प्रणय-केलि प्रच्छन्न रण थिक जाहि मे रणक भयानकताक अभाव तँ रहैछ किन्तु उत्तेजनाक पूर्ण अभिव्यक्ति पाओल जाइछ।

यथार्थतः स्त्रीक अन्दर दुई भिन्न प्रकारक भावना रहैत अछि। पहिल भावना तँ मातृत्वक भावना थिंक जे सरस, कोमल, निरीह वस्तुक कामना करैत अछि जकरा पर ओ अपन मातृत्व कें उभैल सकए और दोसर भावना प्रणयिक भावना थिक जे कठोरता, पीड़न, भय और संघर्ष आदि सँ भरल रहैछ जे चाहैत अछि जे इच्छाक विरुद्धो ओकरा पर पुरुष अधिकार करैक। अतएव एहि कलहक परिणति उत्तेजना, बाधा, विलम्ब, तथा अन्त मे समर्पण मे होइछ।

भय और क्रोध दुई गोट मूल मनोवेग थिक जकरा सँ किओ मुक्त नहि अछि। एहि दुहुक सम्बन्ध मानवक काम-भावना सँ अछि। प्रणय-केलि मे एहि दुहु मनोबेगक स्थान अछि। पुरुष स्त्री पर अधिकार करबाक तथा ओकरा संतोष देवा मे सामान्यतः ओहि विधिक उपयोग करैत अछि जकरा द्वारा ओ शत्रु पर अधिकार करबाक हेतु करैत अछि। स्त्री पक्षक प्रणय केलि मे भय मनोमुग्धकारी रूप मे प्रकट होइत अछि। लाज एहि भयक एकगोट सरस रूप थिक। प्रणय काल मे पुरुषक क्रोध पर स्त्री कें आनन्द होइछ। प्रेमक घात-परिघात दुहु दलक सेना थिक। रति-रणक साज मे दुहु पक्षक घात

व्यूह थिक। दाँत, आँखि, नह, कटाक्ष, कुच आदि काम-क्रीड़ाक अवयवे शस्त्रास्त्र थिक जकर प्रयोग रति रण मे होइत अछि। नायिकाक शृंगार-प्रणाली मे युद्धक उपक्रम रहैत अछि। सुन्दर मन्द गयन्दक चालि गज थिक। आँचर ढाल, घोघ छत्ता तथा फूजल केशराशि काम-नृपतिक भँवर थिक। दुहु कुच दुर्धर्ष योद्धा, वस्त्र कवच तथा लट तरुआरि थिक। झाँझ सेज एवं नूपुर सेनाक निशान थिक। नेत्र वाण थिक जे कान तक खींचल अछि। भौंह धनुष, दाँत शक्ति तथा नह शूल थिक। कुंज रथ और सखी सारथी थिक।

रति-रणक वर्णन जायसी पद्मावत मे बड़ मनोरंजक रूपेँ कएलनि अछि। पद्मावती रत्नसेन केँ रति-रणक निमित्त लक्ष्य करैत अछि जे रावण सन ओ संग्राम करथि किएक तँ ओहो शृंगारक सेना सजाए लेने छल। ओकरा हाथीक गति छलैक, आँचर मे ध्वजाक फहरान छलैक, नेत्र मे समुद्रक हिलकोर छलैक क्षेत्र नासिका मे खड्गक रूप छलैक। अतएव रण मे ओकरा समक्ष के ठाढ़ भए सकतैक ?

पद्मावतीक एहि चुनैती केँ आमर्ष मानि रत्नसेन जकर योग, शृंगार और शक्ति पर समान अधिकार छल अपन विजय प्राप्त करबाक आशा करैत पद्मावती केँ आश्वस्त कएल जे ओ युद्ध मे शत्रु दलक सम्मुख रहैत छल और ओतए पद्मिनीक पार्श्व मे कामक कंटक दलक समक्ष अछि। युद्ध मे क्रोधातुर भेला सँ ओ अरिदलकेँ मर्दन करैत छल और एतए ओ ओकर अमृतरस पीबाक हेतु अधर केँ खण्डन करत। ओतए ओ खड्ग सँ नृपतिक संहार करैत छल और एतए ओ ओकर विरहाग्निक संहार करत। ओतए ओ कंटक और स्कधांवारक नाश करैत छल और एतए ओ ओकर शृंगार केँ जीतत।

रति-रणक वर्णन कवि कोकिल विद्यापति, विहारी तथा आनो-आन कवि लोकनि कएलनि अछि।

अतएव प्रणयक सम्बन्ध रति-रण सँ बड़ प्राचीन अछि जे कहुखन तँ अनंग नृपति केँ पराजित करबाक हेतु, कहुखन प्रिय सँ सामान्य रति मे प्रतिशोधक भावनाक निमित्त और कहुखन मान-भंग भेला सँ होइत अछि।

लोरिकाइन मे उद्‌भवक प्रसंग मे एवंक्रमक वर्णन अछि। एहि कालक उपक्रम मे कहल गेल अछि जे :—

प्रणय काल मे
रमणी छिड़िआइत छैक,
चूड़ी झनझनाइत छैक,
आभूषण रन-रनाइत छैक,
आ चान घमाइत छैक,,

प्रलय कालक सम्बन्ध जीवनक अन्त सँ अछि। एहि प्रसंग मे लोरिकाइनक एहि तरहक वाक्य अछि :—

युद्ध काल मे
घोड़ा रमकैत छैक
योद्धा सनकैत छैक,
शस्त्र झनकैत छैक
आ तरुआरि चमकैत छैक।

तात्पर्य ई जे जीवनक एके तत्व उन्मादक रूपमे एहि दुहु संग्रामक संचालक थिक जकर सम्बन्ध लोक-जीवनक संग अविच्छेद अछि।

पुनः मिथिलाक देशाचारक विलक्षण उदाहरण लोरिक कें लिखल गेल माँजरिक पत्र मे उपलब्ध अछि :—

माँजरि सिन्दुर सँ अपन सोहाग लिखलनि,
काजर सँ अपन वियोग लिखलनि,
आ अपन कनगुरिया आंगुर चीरिकए,
ओहि शोणित सँ सावरक वीरगति,
आ मैनावतीक सत्त लिखलनि,

वस्तुतः माँजरिक पत्र लेखन कला मे तन्त्र पर आधारित भारतीय दर्शनक तथ्य सन्निहित अछि। लाल सिन्दुर सँ तात्पर्य विमर्श अर्थात् निराकार ब्रह्मक साकार रूप सँ अछि। कारी-काजर सँ तात्पर्य मोह और अज्ञानक तमो-

गुण सँ अछि तथा कनगुरिया आंगुर केँ चीरि शोणित सँ तात्पर्य रजोगुण सँ अछि जे क्रमशः सृष्टि (ब्रह्मा), स्थिति (विष्णु) और प्रलय (महेश्वर) केँ गम्य करैत सृष्टि प्रक्रियाक दिग्दर्शन करबैत अछि।

मिथिलाक लोक जीवन मे एहि तथ्यक पालनक क्रम मे लाल मोइस सँ शुभ-सूचक निमन्त्रण, तथा कारी मोइस सँ वियोगादिक अशुभ-सूचक निमन्त्रण देबाक परिपाटी अछि तथा वलिदानक काल मे वलिक शोणीत सँ वलिदानकर्त्ताक भाल पर ठोप करबाक विशिष्ट परम्परा मैथिल समाज मे प्रचलित अछि।

मिथिलाक जीवन मे कनगुरिया आँगुरक स्थान बड़ व्यापक अछि। ई दुहु आंगुर बाम और दहिन हाथक संयोयक थिक। फलस्वरूव विराट-पुरुषक दुई अंग पुरुष और स्त्रीक संयोजकक एकरा प्रतीक मानल जाइछ। तेँ मिथिलाक कतिपय जाति मध्य कन्यादानक अवसर पर वरक दाहिना हाथक कनगुरिया आँगुरक तथा कन्याक बामा हाथक कनगुरिया आँगुर केँ चीरि ओकर शोणित केँ पानक माध्यम सँ एक दोसरा केँ खुएबाक परिपाटी अछि जाहि सँ ओकरा लोकनिक मन और अन्त:करण एक होअए।

एवंक्रमेँ लोरिकाइन मे ठाम-ठाम जे तान्त्रिक प्रक्रिया सन्निहित अछि ओकर अपन पृथक स्थान छैक जे मिथिलाक तान्त्रिक जीवनक दिग्दर्शन करवैत अछि।

नृत्य :

लोरिकाइन मे ठाम-ठाम नृत्यक प्रसंगक जे चर्चा आयल अछि ओ शास्त्रीय नृत्य सँ सर्वथा भिन्न अछि। एहि मे वर्णित नृत्यक नाम मे अशिखण्डा नृत्य, रण-चण्डी नृत्य, पूजा तथा वज्रयोगिनी नृत्यक नामक उल्लेख अछि। एहि नृत्य सभहक वर्णन ने तँ भरत अपन नाट्यशास्त्र मे, ने नन्दिकेश्वर अपन नाट्य दर्पण मे आ ने कोनो आने नृत्यक ग्रन्थ मे सन्निहित अछि।

तिब्बत मे दलाइ लामाक समक्ष तेरह गोट बालकक द्वारा हाथ मे कुरहैर लए एक गोट नाचक परम्परा अछि। एहि नाचक सम्बन्ध यद्यपि ओहि देवी-

देवताक बाल-बच्चा सभ सँ कहल जाइत अछि जे राजा स्रोन त्सेन गेम्पोकेँ दर्शन देने रहथिन किन्तु एकर सम्बन्ध प्राचीन समयक राजा लोकनिक युद्धक स्मृति स्वरूप थिक।[1] एहि नृत्यक सम्बन्ध अशिखण्डा नृत्य सँ अछि जेना कि प्रायः कुरहरिक बदला नाचनिहारक हाथ मे तरुआरि रखबाक प्रथा सेहो अछि। ई नृत्य प्रधानतः युद्धक स्मरण करवैत अछि जकरा रणचंडी नृत्य सेहो कहल जाइछ।

तिब्बतक धार्मिक जीवन केँ बुझबा मे प्रायः विद्वान लोकनि केँ भ्रान्ति भेलनि अछि। तिब्बतक रहस्यात्मक नृत्य "चम" केँ "डेबिल डान्स" कहबाक परम्परे बनि गेल। चम तिब्बतीय लामा द्वारा प्रस्तुत एकगोट धार्मिक नृत्य थिक। एहि मे कतिपय देवी-देवताक आचरण तथा क्रिया-कलाप सँ सम्बद्ध नृत्यक समावेश रहैछ जकर मुद्रा, हाव-भाव आदि प्रतिक्रियात्मक रहैत अछि।

चमक प्रधान उद्देश्य ओहि देवी सभहक शक्तिक प्रदर्शन सँ अछि जनिकर आराधनाक अवसर पर एहि नृत्यक आयोजन कयल जाइछ। एहि नृत्य मे अमांगलिक तत्वक निष्कासनक हेतु मनुष्यक मृतक शरीरक प्रयोजन होइछ जकरा लिंग वा चेन्ह कहल जाइछ। अतएव मनुष्यक मृतक शरीरकेँ आवि ओकरा जीवन तत्व प्रदान कए ओहि मनुष्यक हत्या एवं ओकर विविध अंगकेँ विच्छेद कएलाक उपरान्त एहि नृत्य केँ प्रारम्भ काएल जाइछ।[2]

पूजा नृत्यक सम्बन्ध एहि नृत्य सँ अछि जकरा द्वारा शक्तिक अवाहन कएल जाइछ।

तिब्बतक धार्मिक जीवन मे प्रतीकात्मक पद्धति केँ बड़ महत्त्व अछि। आध्यात्मिक एवं प्रतीकात्मक क्रियाक द्वारा मुक्ति प्राप्त करबाक भावना तिब्बतीय जीवनक बड़ महत्वपूण अंग थिक। एहि विषयक प्रतिपादन तिब्बतक गणेद नामक नृत्यक आयोजन द्वारा होइत अछि। एहि नृत्यक सम्पादन वज्र

---

१. चार्ल्स बेल, दि पिपुल्स आफ तिब्बत, पृ० २१३-१४

२. डाविड स्नेल ग्रोम तथा रिचार्डसन, कल्चरल हिस्ट्री साफ तिब्बत, पृ० २४६-२४७

योगिन अपन अद्भूद शक्तिक द्वारा करैत अछि । नृत्यक अनन्तरे वज्रयोगिनी स्वतः अपनहि हार्थे अपन मस्तक कें काटि तथा अपन शारीरिक अंग कें काटि कें जीव-जन्तुक भक्षण करवाक हेतु दैत अछि । एहि नृत्यक तात्पर्य वास्तविक शून्यता मे विश्राम कें प्राप्त करवाक हेतु कालचक्रवत जीवनक गति मे अहंक भावना सँ अपना कें मुक्त करब थिक ।

एहि प्रसंग मे भगवती छिन्नमस्ता जे स्वतः अपन मस्तक कें काटि अपनहि हाथ मे रखने रहैत छथि विशिष्ट प्रमाण थिक ।

छिन्न मस्तकक अर्थ अहंक भावना के नष्ट करबा सँ थिक । मनुष्यक अस्थिपञ्जरक प्रयोग तिब्बत मे वोन धर्मक पूर्वे सँ प्रचलित छल जकर सम्बन्ध वज्र नृत्य सँ अछि एहि नृत्य मे कोनो देवीक अवाहन कएल जाइछ जनिकर रूप रौद्र रहैत छनि ।[1]

उपर्युक्त नृत्यक सम्बन्ध वज्रयोगिनी नृत्य सँ अछि । एवंक्रमें लोरिकाइन मे वर्णित ठाम-ठाम जे नृत्यक प्रसंग अछि ओहि पर वज्रयानक पूर्ण प्रभाव पओल जाइछ जे पूर्णतः एगारहम शताब्दी मे भारतीय विचारधारा मे परिणत भए गेल छल तथा मिथिलाक तान्त्रिक जीवनक परम्पराक एक अविच्छेद अंग बनि गेल जकर पुष्टि मिथिला मे प्रचलित चीनाचार पद्धति एवं उग्रताराक पूजाक परिपाटी सँ अछि ।

काव्य प्रबन्ध :

लोरिकाइनक काव्यप्रबन्ध बहुत अंश मे संस्कृतक काव्य परम्परा सँ भिन्न अछि । ई काव्य—जन्म खण्ड, सती माँजरि खण्ड, चनैन खण्ड, रण खण्ड, सावर खण्ड, बाजिल खण्ड, सभौती खण्ड एवं भैरवी खण्ड—आठ खण्ड मे विभाजित अछि जकर प्रत्येक खण्ड कें अपन नामक छैक आ जकर लड़ी महानायक द्वारा एक दोसरा सँ जोड़ल अछि। एहि मे चौपाइ कें चौखड़ि और दोहा कें विश्राम कहल गेल अछि। श्लेष, यमक, उपमा, अलंकार तथा शब्द छवि एहि मे तेहन ने स्वाभाविक रूपें सुनियोजित अछि जे कतहु

---

२६. तिब्वतूस टेरीफाइंग डिटरीज, पृ० १४१-४२,४५

एकोरत्ती जानि समानि कें आनल नहि प्रतीत होइछ । रसक दृष्टिये लोरिकाइन मे वीररस, श्रृंगार रस और करुण रसक प्रधानता अछि । एहि गाथाक शब्द सौष्टव, अर्थगौरव तथा ध्वनिक गतिशीलता तँ विलक्षण अछिये संगहि उपमा और उपमेय मे लोक जीवन जे मुखरित भेल अछि ओकर किछु प्रमाण प्रस्तुत कएल जाइछ । लोरिकाइन मे वर्णित लोरिकक प्रसंगक वाक्य एवंक्रमक अछि:—

सखुआक सोहल सारिल आ सॉलल खम्भा सनसन जाँघ,
धस्सल आ रस्सल पाथरक धोबियाक पाट सनसन छाती ।
सिंहसनक डाँड़, वृषभसन कान्ह,
आ दन्तार हाथी सन उन्नत मस्तक छलनि,
ओ जखन चलथि तँ लागय जेना
नीलाचल पर्वतक श्रृंग रमकल जा रहल हो ।

लोरिकक भगवती प्रदत्त खण्डकक प्रसंगक वाक्य अछि :—

लोरिकक हनहन करैत खंडा , विजुरि लता जकाँ ।
शत्रुक सैन्य घटा पर चमकि रहल छल ।
ओ जेम्हरे लौकेक तेम्हरे रक्तक बुभकार छुटैक ।
लगैक जेना ओहि खण्डाक धार सँ
लिधुरक छरहरा, फेन आ फोंका उठि रहल हो ।।

जहिना लोरिकाइन मे एक दिशि वीर रसक छटा छैक तहिना ओहि मे श्रृंगार रसक शौन्दर्य मधुमय सुषमा भरल अछि । लोरिकक प्रेयसी मांजरिक सौन्दर्य मधुमय प्रसंगक वाक्य एहि तरहक अछि :—

बिजुरि रेहसन पातरि-छीतरि
मुँह उदीयमान सूर्य सन
सिन्नूर औंसल पुरनिक पात सन छह छह देह ।
लाल कमल दल सन अरुणायल आँखि
जकर कोर कान दिस बढ़ल हो,

सुग्गा सन नाक तिलकोड़क फड़ सन अधर पर झुकल,
रहि रहि कें दाड़िम बीजक पाँती छिटकि उठैक ॥

चनैनक रूपक छटाक सम्बन्ध मे एवंक्रमक वाक्य अछि:—

चम्पक वर्ण, कड़ड़ीक थम्ह सन जाँघ ।
चढ़ल नाक खंजनि नयन,
आ सात सात हाथक केश ।
आँगी मे रतन झालरि लागल,
आ ताहि मे झमकारि कऽ हीरा टाँकल ।
ओ जखने हँसय तँ दामिनि दमकय,
हँसिनी जकाँ ठुमुकि ठुमुकि कें चलय,
आ परवा जकाँ घुटुकि घुटुकि कें बाजय ।
ओ जकरा दिस ताकय करेज कें सालि दैक ।
आ तकरा कोंढ़ मे बासनाक हुरुक पैसि जाइक ।
ओकर टिकुली अंगोर जकाँ छिटकैक
आ खोपा चानक पाछूक कारी पर्वतक शिखर जकाँ लगैक ॥

पुनि: —

ओकर सात सात हाथक लट
धारा मे वहइत बुझि पड़ैक
जेना हिलोर पर नागिनि खेलि रहल हो
ओ जखन कुड़ड़ा करय तँ लगैक
जेना सोनाक झाड़ी सँ फुहारा छुटि रहल हो
स्नानक क्रम मे ओकर दुनू उरोज लगैक
जैना दू टा औन्हल कनक कटोरा
संगे संग पानि मे उब-डूब कऽ रहल हो ॥

लोरिकाइनक कथावस्तु मे माधूर्यक संग साधनाक, शौर्यक संग त्यागक तथा क्रूरताक संग मानवताक आदर्श निरूपित भेला सँ मैथिली, मगही,

भोजपुरी आदिक कोन कथा बुन्देल खण्ड सँ लए बंगाल तक एगारह गोट भाषा मे सप्रमाण भेल प्रेमाख्यान केँ १४हम शताब्दीक मुल्ला दाउद तथा १५ शताब्दीक साह सुलेमान अरबी और फारसी मे रुपान्तर कएलनि। मुल्ला दाउद फीरोजशाह तुगलकक समय (१३५१-१३८८) ई० क बीज भेल[1]। सम्भवत: फिरोज साहक संग मौलाना दाउद मिथिलाक आक्रमण मे आयल होथि तथा एतए एहि गाथाक माधूर्य सँ विमुग्ध भए एकर रूपान्तर करबौने होथि। हुसैन शाह जौनपुरक शर्की वंशक अन्तिम राजा छलाह जे तिरहुत पर आक्रमण कएलनि। प्राय: अपन ओहि आक्रमणक क्रम मे ओहो एहि गाथा केँ रूपान्तर कएलनि। तेरहम शताब्दीक ज्योतिरीश्वर वर्णन रत्नाकर मे "लोरिक नाट्य" रूप मे एहि गाथाक वर्णन कएलनि अछि जे ओहि युग मे ततेक जनप्रिय भेला सँ नृत्यक रूप ग्रहण कएलक।

वस्तुत: लोरिकाइनक कथावस्तु, भाषा, भाव एवं प्रेमाख्यानक आसाधारण माधूर्य समस्त पूर्वी भाषा केँ ओतप्रोत कएलक।

---

१. परमेश्वरी लाल गुप्त, चन्दायन; भू० पृ० ४

नैका बनिजारा

नैका बनिजारा एकगोट प्रेमकथात्मक लोकगाथा थिक जे समस्त बिहार राज्य मे पाओल जाइछ। बिहारक विभिन्न भाषाक क्षेत्र मे ई विभिन्न नाम सँ प्रचलित अछि। कतहु तँ एकरा नैका बनिजारा कतहु वारी और शोभा कतहु नायका और कतहु शोभानायका कहल जाइत अछि। मिथिला क्षेत्र मे एहि गाथा केँ नैका बनिजारा कहल जाइछ। एहि गाथा मे विरहक मार्मिक वर्णन अछि। गाथा संक्षेप मे एहि तरहक अछि:—

नैका नामक वणिक पुत्रक विवाह चम्पा नरेशक सुपुत्री फुलेश्वरी सँ भेलेनि। नैका दुरागमन कराए जखन अपन पत्नी के अनलनि तँ ओ पुनः व्यापार कर-बाक निमित्त बारहवर्षक महायात्रा मे प्रस्थान कएलनि। मार्ग मे ओ राति मे एक गोट वृक्षक नीचाँ सुतल छलाह, ओहि वृक्ष पर विध-विधकरी (एक गोट दिव्य पक्षीक दम्पत्ति) रहैत छल। ओ पक्षी अपना मे वार्त्तालाप कए रहल छल जकरा वार्त्ता सँ नैका के पता लगलनि जे ओहि रात्रिक मुहूर्त्त बड़ शुभ छल। एहेन शुभ मुहूर्त्त मे जे व्यक्ति अपन पत्नीक संग समागम करत ओकरा दीर्घायु, प्रफुल्ल, स्वस्थ्य, अक्षय, पराक्रमी, सर्वगुणसम्पन्न प्रतिभावान पुत्र उत्पन्न होयत।

एहि कथा केँ सुनि नैका गुप्त रूपें ओहि राति अपन गृह आबि पत्नोक संग समागम कएलनि। लोकापवाद सँ वचवाक हेतु ओ पत्नी के अभिज्ञान स्वरूप अपन औँठी दए यात्राक निमित प्रस्थान कएलनि तथा बारह वर्षक उपरान्त पुनः गृह आपस एलाह। एहि अभ्यन्तर गर्भवती फुलेश्वरी केँ ओकर छोटकी ननदि तिलकेश्वरी द्वारा बड़ दुर्गति भेलैक जकरा आचरणक प्रसंग मे गाथा मे एहि तरहक उल्लेख अछि :—

"तिल फुल सनक हुनक नाक छलनि,
छह-छह कपोल, अहंकारक साकार मूर्त्ति,

वाज पक्षी सन सतत क्रुद्ध आ निरड़ल निरड़ल आँखि
ओ छुब्ध डेग दैत चलथि आ लुब्ध दृष्टि मे ताकथि''
हुनकर ठोर रहि रहि कए काँपि उठैत छलनि,
ओ कोनो व्यक्तिक सुन्दर सुमधुर आ सुमनोहर
दृष्टिगोचर हो तकरा देखिते,
हुनका जेना उकारी लेसि दनि,
आ हुनका कोंढ करेज सँ धधरा उठए लागनि ।।''

तिलकेश्वरी द्वारा अपमानित भए प्रथम तँ ओ घर सँ निष्कासित भेलीह और पश्चात काशीक कुम्भा डोमक हाथें बेचल गेलीह जे नारीक व्यापार करैत छल । अपन सतीत्वक रक्षा करैत एवं अपन पतिक पुर्नमिलनक चिर संचित अभिलाषा केँ अपना अन्त:करण मे संयोगि फुलेश्वेरी केँ स्वत: अपनहि जेठकी ननदि द्रोण नगरक रानी तुलेश्वरी कीनि लेलनि जतए सँ फुलेश्वरीक सृजनात्मक वृत्तिक आरम्भ भेल। गाथा मे रानी तुलेश्वरीक आचरणक प्रसंगक एवंक्रमक वाक्य अछि :—

धर्मप्राण सदिखन कोमल भावना सँ भीजलि,
लोक कल्याण लए आकुल तुलेश्वरी,
जखन अपना भवन सँ बाहर भए गंगा स्नान करए जाथि,
तँ नित्यप्रति अन्न वस्त्र या सोना दान करथि,
ककरो कनैत सुनथिन तँ अपने कानय लागथि,
हुनका पाछू पाछू श्यामा गौक जेर हँकरैत चलनि,
विद्वान, भिक्षु, कुमारि कन्या, गाय आ पक्षी केँ,
भोजन देने विना ओ भोजन नहि करथि,
जाहिठाम क्रुद्ध होयवाक अवसर आवय ओहिठाम,
ओ स्वयं कानए लागथि आ अपने दोष ताकए लागथि ।।

ओ कुम्भा डोम सँ कीनल फुलेश्वरी के बेर-बेर कहथिन ''अहाँ हमर कियो अप्पन छी । एहि जन्मक नहि तँ ओहू जन्मक । जेँ कि अहाँ एक्कोक्षण लए

हमरा आँखिक ओठ होइत छी हमरा करेज मे टीस उठि जाइत अछि आ आँखि मे टनक। होइत अछि जेना कोनो महादुर्लभ रतन हेरा गेल हो।''

नैका बनिजारा केँ अएला पर जखन परिचय और वस्तुस्थितिक उद्घाटन भेल तँ ओ हुनका अपन करेज मे लगा कें कहलथिन—'हे रानी! हमर सभटा अपराध केँ क्षमा करबैक। हम नहि जनलहुँ जे अहाँ हमर अपने भाउज छी''।

मिथिलाञ्चल मे नैका बनिजाराक नमूना गीतक नमूना एवंक्रमक पाओल जाइछ:—

तब वारी रे कानय जार-बेजार कानइ रे ना।
दुर्गा गे स्वामी के लैके कोहवर घर लेबोने केलही रे ना॥
कोहबर घर सँ हमरा निकालियो देलकैक रे ना।
दुर्गा गे कोना बचबै अन्न-पानि बिन केना रहबइ रे ना॥

नैका बनिजाराक भोजपुरी रूप केँ सर जार्ज ग्रियर्सन जे० डी० एम० जी० अंक ४३ (१८८९), पृ० ४६८-सेलेक्टेड् स्पेसिमेन्स आफ दि बिहारी लैंगुएज, पार्ट २-दि बिहारी डाइलेक्ट दि गीत नैका वनिजरबा नाम सँ प्रकाशित करौलनि जकर नमूना एहि तरहक अछि:—

भौजो काहँ तोर चहँरा उदसवा हो ना।
भौजो काहँ तोर छवि मुँह पिअरिया हो ना॥
भौजो साँचे साँचे कहँ दिल के वतियाँ हो ना।
रामा बोलि उठे वारि दस बँतिया हो ना॥
रामा मोरे स्वामी आबँले महलिया हो ना।
ननदो छवै महिनवाँ के गरमवा हो ना॥
ननदो ओहि लागि उठे मुँह पिअरिया हो ना।

ऐतिहासिकता:

नैका शब्दक सम्बन्ध नायक अर्थात् मुख्य व्यक्ति जकरा ज्येष्ठ सार्थं कहल जाइत छल, सँ अछि। ओकरहि वनिजार अर्थात् वाणिज्यकारक या वाणिज्यारक कहल जाइत छल। एहि शब्द कसम्बन्ध आथी-साथी शब्द सँ अछि[1] जे सार्थवाह

---

१. काया माया संग न आथी,
जेहि जिय सौंपा सोइ साथी
(पद्मावत, खण्ड १३। १४४) मे वर्णित शब्द।

व्यापारी सँ लेल गेल अछि। आथो शब्द संस्कृतक आर्थिक तथा प्राकृतक अत्थिय जकर अर्थ धनीक तथा धनवान होइछ सँ सम्बद्ध अछि तथा साथी शब्द संस्कृतक सार्थिक एवं प्राकृतक सत्थिय अर्थात् सार्थवाह जकर अर्थ सार्थक अर्थात् मुखिया सँ अछि, सम्बद्ध अछि।[१]

अमरकोषक टीकाकार क्षीरस्वामीक विचार अछि जे ओ व्यक्ति जे पूँजी द्वारा व्यापार करएबालाक अगुआ होइछ ओ सार्थवाह थिक[२]। सार्थ शब्दक अर्थ अमरकोष मे यात्रा केनिहार पथिकक समूह कएल गेल अछि।[३]

समान या सहयुक्त अर्थ (पूँजी) क व्यापारी जे बाहरक आन-आन दलक संग व्यापारक निमित्त ऐक संग चलैत छल ओ सार्थ कहबैत छल तथा ओकरा नेता कें अर्थात् ज्येष्ठ व्यापारीकें सार्थवाह कहल जाइत छलैक।

ग्रियर्सन द्वारा प्रकाशित नैका बनिजाराक गीतमे नैकाक प्रसंग एवंक्रमक उल्लेख अछि :–

विप्र साठि घर वसेले नैकवा हो ना।
रामा किछु नैका बसे कलवरवा हो ना॥
रामा किछु नैका वसेले बनियवाँ हो ना।
रामा एके नैका बाड़े अब तेलिया हो ना॥

प्रधानतः कलवाड़, बनियाँ और तेली जातिक लोक जे बरदगाड़ी द्वारा व्यापार करैत छल ओकरा बनिजारा कहल जाइत छलैक।[४] एहि जाति मे सँ नैका बनिजाराक सम्बन्ध तेली जाति सँ छल। गाथा मे नैकाक स्वसुरक नामक प्रसंग मे एहि तरहें वर्णित अछि :–

रामा बेटी हवे बारी दसवँतिया हो ना।
रामा ओकर वाप हये जदूसहुआ हो ना॥ (१७५-१७६)

१. पद्मावत, वासुदेव शरण अग्रवाल द्वारा संपादित, पृ० १६५
२. सार्थान् सधनान् सरसो वा पान्थान बहति सार्थवाहः अमर ३-९-७८
३. सार्थोऽध्वनवृन्दम्, अमर २-६-४२
४, जे, डी. एम. जी. अंक ४३, पृ० ५१७, पाद टिप्पणी १

ग्रियर्सन नैका बनिजाराक गाथा एवं मिथिलाक उत्तराञ्चल तथा नेपाल तराय मे प्रचलित नेवारक गाथा कें एके मानैत छथि।[१] जे०जे०डी०एम०जी०क ओहि अंक मे सेहो प्रकाशित अछि । एहि शीतक नमूना एहि तरहक अछि :—

भाग बेरि सुमिरों भगवतिया हो ना ।
रन बेरि सुमिरों दुर्गाभण्डरबा हो ना ॥
चम्पापूरे बसै सँभू बनिया हो ना ।
अपनहिँ विलास से गेल सरलोगवा हो ना ।
अबध पूरे बालक दुई वाँचल हो ना ॥

ग्रियर्सनक अनुसार बानिजाराक दल जकर नायक नैका छलाह असंख्य बरद-गाड़ीक द्वारा नेपाल सँ चाउर और तीसी कें कीनि पटना मे ओहि चाउर और तीसी कें बेचैत छलाह जकरा कलकत्ताक माध्यम सँ विश्वक आन-आन भाग मे पटना चाउरक नामें ख्याति प्राप्त छलैक तथा तीसीक माँग जर्मनी मे बड़ बेसी छलैक ।[२] नेपाल मँ ग्रियर्सनक तात्पर्य भारतक उत्तरी सीमा एवं हिमालयक बीचक समतल भूमि सँ अछि जकरा तराय तथा मोरंग कहल जाइछ ।

नैका बनिजाराक प्रसंग मे डा० ब्रज किशोर वर्मा माणिपद्म पटना सँ प्रकाशित मिथिला-मिहिर मे किछु निवंध प्रकाशित करौलनि तथा नैका बनिजारा: ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित कएलनि अछि । अहि सभकें पढ़ला सँ यद्यपि प्रतीत होइछ जे ई गाथा बड़ प्राचीन अछि किन्तु गाथाक भाषा एवं आन-आन तथ्य सँ एकर प्राचीनताक पुष्टि नहि होइछ । अतएव जाधरि सम्पूर्ण गाथा प्रकाशित नहि होइत अछि एकर ऐतिहासिकताक प्रसंग मे किछु कहब कठिन थिक ।

नैकाबनिजारा उपन्यास मे वर्णित स्थानक नाम मे चम्पा, दमनपुर, अरुणाघाट, कमलपुर, सोनहृदक पहाड़ी, किन्नर देश, वरुण नदी, गयातीर्थ, सोनपुर, शोभितपर, ताम्रलिप्ती, तामलुक, जगन्नाथ, यवद्वीप. सुमात्रद्वीप,

---

१ ओतहि, पृ०४६९
२. ओतहि

तथा द्रोणनगर, इत्यादि स्थानक नाम वर्णित अछि जकरा सभहक अपन-अपन पृथक इतिहास छैक ।

चम्पा अंग जनपदक राजधानी छल । ई नगर चन्दन और गंगाक संगम पर बसल छल ।[१] जातकक[२] अनुसार चम्पा मिथिला सँ ६० योजन दूर छल । आधुनिक भागलपुरक चम्पानगर और चम्पापुरक भूभाग प्राचीन चम्पाक भूभाग थिक । परिनिर्वाणसूत्रक अनुसार चम्पाक स्थान भारतक छौ महानगर मे छल । विमानवत्थुक टीका सँ ज्ञात होइछ जे अंगक व्यापारी असंख्य घोड़ा गाड़ी पर सिन्धु सौवीरक संग व्यापार करैत छल ।

दमनपुर मध्यकालक तरायक कोनो छोट-छीन राज्य रहल होयत ।

अरुण हिमालय पहाड़क सभ सँ पैघ नदी थिक जकरा तीन गोट सहायक नदी—पहिल टिंगरी या पेखु सँ दोसर डुररे तथा तेसर चोलमुक उत्तर एवं किछु पश्चिम सँ कमलाक दक्षिण बहि अपन जल सँ परिपूर्ण करैत अछि ।[३]

नैकाबनिजारा उपन्यास मे नैकाक गामक प्रसंग मे कमलपुर राज्यक उल्लेख अछि । सम्भवतः तरायक झुटकी कमलपुर ग्राम सँ एकर तात्पर्य थिक ।

सोनहृदक सम्बन्ध ओहि पहाड़ सँ अछि जतए सँ सोन नदीक उद्भव होइछ । किन्नरदेश हिमालय पर्वतक उत्तर मे छल ।[४] वरुण नदी कोनो नेपाल तरायक छोट-छीन नदी थिक ।

गयातीर्थक सम्बन्ध प्रसिद्ध गया सँ अछि तथा सोनपुर प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र थिक । हरिहर क्षेत्रक मेलाक वर्णन भोजपुरी रूप मे एवंक्रमक अछि[५] :—

रामा सुनि लेवे भिखमा वगहिया हो ना
भिखमा चलि चले अब हरिहर छत्तर हो ना

---

१. ह्वेन्त्सांग, वाटर्स, भा० २, पृ० १८१
२. जातक, भा० ६, पृ० ३२
३. बी० एच० होडसन, एसेज ऑन दि लैंगुएज, लिटरेचर एण्ड रिलिजन ऑफ नेपाल एण्ड तिब्बत, भाग २, पृष्ठ २७
४. दिव्यावदान, पृष्ठ २९६-२९९
५. जे. डी. एम. जी., अंक ४३, पृ० ४९४

बबुआ कुछु बैल छलहु वेसाही हो ना
रामा चलि भेलै नैका बनिजरबा हो ना
रामा चलि गैले अब हरिहर छत्तर हो ना ॥

शोभितपुर सेहो तरायक कोनो छोट-छोन नगर रहल होयत। ताम्रलिप्ती प्राच्य देश मे वंग जनपदक प्रख्यात बन्दरगाह छल जे अद्यावधि मिदनापुरक अन्तर्गत तामलुक परगना थिक। जगन्नाथक संबंध पुरीक प्रसिद्ध जगन्नाथ सँ अछि। यवद्वीपक यावा सँ तथा सुमात्रद्वीपक संबंध सुमात्रा सँ अछि। द्रोण नगर प्रायः कौशल देश मे स्थित द्रोणवस्तु ग्राम थिक।

नैका बनिजारा उपन्यास मे दसुराज मकर, नागमणि धाँगर, भिक्षु देव-पद्म, बकर बनिजारिन कनक मंजरी तथा सागर बनिजारा रत्नसेन जनिकर पाँच सहस्र सागर महापोत सागर मे विश्राम कए रहल छल आदि व्यक्ति सभहक प्रसंगक वर्णन अछि।

लगभग पाँचम शताब्दी ई० पूर्वक बौद्ध साहित्य सँ यात्राक विषय मे कतिपय मनोरंजक सूचना उपलब्ध होइत अछि। यात्रा केनिहारक मध्य व्यापारी लोकनिक अतिरिक्त साधु-संन्यासी, तीर्थयात्री, आदि सेहो रहैत छलाह। यद्यपि पथक निर्माण तथा सुरक्षा पर पूर्ण ध्यान देल जाइत छलैक तथापि सतत चोर-डाकूक उपद्रव होइत रहैत छलैक जकरा पाणिनि सूत्र मे पान्थघातक या परिपन्थिन कहल गेल अछि।[१] एहि प्रसंगक पाणिनि सूत्र ५-२-८९क टीका मे एकगोट प्राचीन वैदिक प्रार्थनाक वाक्य 'मा त्वा परि-पन्थिनो विदन्' अर्थात 'भगवान करथि जे कतहु मार्ग मे अहाँ कें बटमार ने भेटथि' उदाहरणक क्रम मे उपलब्ध अछि।

सातम-आठम शताब्दी मे भारतीय व्यापारक बड़ अभ्युदय भेल। आरम्भे मे तें वाणभट्ट पृथ्वीक गरदनि मे अठारह द्वीपक मंगल माला पहिरौलनि तथा सर्वद्वीपान्तर संचारी पाद-लेपक कलपनो कें साकार रूप देलनि। आठम शताब्दी मे भारतीय व्यापारीक जवरदस्त प्रतिद्वन्दी अरबक

१. परिपथं च तिष्ठति, ४/४/३६

नाविक लोकनि छलाह। घोड़ाक व्यापार तँ पूर्णतः हुनके लोकनिक हाथ मे छल। फलस्वरूप संस्कृत नामक स्थान पर अरबी नामक प्रचार और प्रसार भेल। आठम शताब्दीक हरिभद्रसूरि 'समराइच्च कहा' मे सर्वप्रथम अरबी नाम 'वोल्लाह'क प्रयोग कएलनि तदुपरान्त हेमचन्द्रक समय मे तँ घोड़ा देशी नामक अपेक्षा अरबी नामेँ प्रसिद्ध भए गेल। भारतवर्ष मे एहि तरहक स्थिति क्रमशः बढ़ितहिँ गेल। एगारहम शताब्दी मे तँ दिल्ली, कन्नौज, काशी आदि नगरो तक ई बढ़ि आयल। दक्षिणापथक संरक्षक बल्लभक राष्ट्रकूट नरेश लोकनि तँ अरब आक्रमणकारी लोकनिक मित्रे छलाह किन्तु उत्तरक गुर्जर-प्रतिहार नवम-दशम शताब्दी मे एहि तरहक अवरोधात्मक प्रवृत्ति केँ रोकलनि जनिकर प्रवल पराक्रमक समक्ष विदेशी आक्रमणकारी सर्वदा आतंकित रहैत छल। एवंक्रमेँ एगारहम-बारहम शताब्दी मध्य चौहान और गढ़वाल राजा लोकनि उत्तरापथ केँ विदेशी आक्रमण सँ रक्षा करैत रहलाह।[1]

उपर्युक्त विवरण सँ निस्सृत होइछ जे समाज विरोधी तत्व सतत सक्रिय छल जकर प्रतिनिधित्व ओहि युगमे दस्युराज मकर तथा नागमणि धाँगर करैत छलाह। भिक्षु देवपद्म 'बहु जन हिताय बहुजन सुखाय'क भावना मे निरत एकगोट वीतरागी संत छलाह। बकर बनिजारिन कनकमंजरी प्रायः नेपाल ओर तिब्बतक संग बकरक माध्यम सँ व्यापार केनिहारि एकगोट बनिजारिन छलीह।

पाणिनिक युग मे भारतीय पथ कतिपय श्रेणी मे बाँटल छल। पाणिनिक सूत्र—"उत्तर पथेनाहृतम्" क[2] व्याख्या करैत पतंजलि कात्यायनक एकगोट वार्त्तिक "अजपथशंकुपथाभ्यां च" उद्धृत करैत छथि। एहि वार्त्तिकक अनुसार अजपथ तथा शंकु पथ सँ अजपथिक और शंकुपथिक शब्द बनल। अजपथक उल्लेख अर्थात् ओहिपथक जकरा पर मात्र बकड़ीयेटा चलि सकए, पाणिनीक गणपाठ[3] मे सेहो उपलब्ध अधि। अजपथ पहाड़ी भू-भाग मे निर्मित संकीर्ण

१. मोती चन्द्र, सार्थवाह, भूमिका, पृष्ठ ११
२. ५/१/७७
३. ५/३/१००

पथ छल। ओहि पथक द्वारा जे व्यापार होइत छलैक ओहि मे बकड़ीक प्रधानता रहैत छल।

चार्ल्स बेल पश्चिमी तिब्बत मे भेड़ी तथा बकड़ी कें व्यापारक यातायातक साधनक प्रसंग मे उल्लेख करैत छथि। हुनकानुसारें पश्चिमी तिब्बतक व्यापारी प्रत्येक भेड़ वा बकड़ी पर बीस सँ पच्चीस पौंड भारी सामान लाधि पहाड़ीक शृंखला कें पार कए भारतक यात्रा करैत[1] छलाह जाहि मे प्रधानतः ऊन, नमक और गन्धक रहैत छल।

वस्तुतः कनकमंजरीक संबंध उपर्युक्त व्यापारियेक कोटिक छल जकर व्यापार अजपथेक द्वारा होइत छल। ओकर व्यापार भारत एवं तिब्बतक संग नेपालक माध्यम सँ होइत छलैक।

सागर बनिजारा रत्न सेनक स्थान सागर सार्थवाह मे बड़ विशिष्ट छल। मौर्ययुग मे भारतीय व्यापारीक व्यापार पश्चिम मे बवेरू (वेबिलोन), दक्षिण मे टेप्रोवेन (लंका) तथा पूर्व मे स्वर्णभूमि (सुमात्रा) सँ होइत छल।[2] कौटिल्य ताम्रपर्णिक नामक मोतीक उल्लेख कएलनि अछि जे ताम्रपर्णी मे पाओल जाइत छल। जातक मे समुद्र यात्राक प्रसंगक कतिपय वर्णन अछि जे छः मास तकक होइत छल। एहि तरहक यात्रा नाव द्वारा होइत छल। एक-एकटा नाव मे ५००-७०० यात्री चढ़ैत छल। सरद ऋतु मे नाव समुद्रक तट पर लगाए देवाक परिपाटी छलैक।[3]

एहि तरहक असंख्य व्यापारीक द्वारा आनल विविध वस्तु-जात सँ भरल नाव भारतक प्रत्येक भागक समुद्र तट सँ भारुकच्छ (भड़ौच) तथा सुवर्ण भूमि (सुमात्रा) क संग व्यापारक हेतु जाइत अबैत छल।[4] सागर बनिजारा रत्न सेनहक संबंध एहि श्रेणीक सार्थवाह सँ थिक जनिकर उल्लेख उपन्यास मे यवद्वीप तथा सुमात्रा द्वीपक सागर बनिजाराक नामें उपलब्ध अछि।

---

१. दि पिपुल्स ऑफ तिब्बत, पृ० ११६

२. राधा कमल मुकर्जी, भारत की संस्कृति और कला, पृ० ८९

३. ओतहि

४. ओतहि, पृष्ट ९०

रत्नसेनक चर्चा जायसी पद्मावतक नायकक रूप मे कएलनि अछि जे चित्तौरक राजा चित्र सेनक पुत्र छलाह। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल रत्नसेन केँ रत्नसिंह मानैत छथि। पद्मावत मे एहि रत्नसिंह और पद्मिनीक उपाख्यान अछि। एहि पद्मिनीक रूप-गुण पर आकृष्ट भए अलाउद्दीन (१२९०-१३२१ ई०) चित्तौर पर आक्रमण कएल तथा रत्नसिंहक मृत्युक उपरान्त पद्मिनी आगि मे जड़ि भारतीय नारीक गौरवक रक्षा कएल।

नैका बनिजाराक भोजपुरी रूपक सुमिरनक गीत एहि तरहक अछि :—

तवे त० सुमिरों पीर सुब्हानरे ना ।।४।।
तवे त० सुमिरों डीली के गोरैया रे ना ।।६।।
काली मे सुमिरों कलकत्तवा रे ना ।।१०।।

ग्रियर्सन पीर सुब्हान केँ बिहारक एक गोट सूफी संत मानैत छथि तथा कलकत्ताक स्थापना सेहो तँ १६९० ई० मे भेल। अतएव गाथा मे वर्णित पीर सुब्हान, डीलीक गौरैया और कलकत्ता शब्द सँ निस्सृत होइछ जे एहि लोक गाथाक इतिहास सोलहम-सतरहमशताब्दीक थिक। एकर अतिरिक्त नैका बनिजाराक गाथाक भाषा जे अवहट्टक पश्चातक परिवर्त्तित रूप थिक सँ सेहो एहि धारणाक पुष्टि होइछ।

राजा सलहेस

राजा सलहेसक लोक गाथा बिहार राज्यक विभिन्न क्षेत्र मे विभिन्न रूप मे प्रचलित अछि। एहि लोकगाथाक नायक राजा सलहेस दुसाध छलाह। अतएव सलहेसक पूजा प्रधानतः यद्यपि दुसाध जातियेक लोक करैत अछि तथापि मिथिला मे गामक बाहर बड़ अथवा पीपरक गाछ तर सलहेसक थान रहिते टा अछि।

नेपालक वन-प्रान्त मे जँ बाट-बटोही कतहु बाट बिसरल या कोनहु टा संकट मे ओ परल तँ राजा सलहेसके गोहरौलक आ ओकरा त्राण भेटबे टा कएलैक। जंगल आ पहाड़क दुर्घट आ दुर्धर्ष जनजीवन मे लोकक एखनहुँ अखण्ड आस्था सलहेस पर छैक।

कथानक :

राजा सलहेस मोरंग देशक एक पराक्रमी सुन्दर युवक छलाह। अवतारी पुरुष कें तीन टा विशिष्ट गुण—शक्ति, शील और सौन्दर्य रहैते टा छैक। एहि तीनू गुणक अन्तर्गत हुनकर सम्पूर्ण व्यक्तित्व कें जे लोकरक्षक और लोकरंजक रूप मे रहैत अछि आँकवाक चेष्टा कएल जाइछ जे राजा सलहेसक संग सेहो चरितार्थ भेल।

चौर-कर्म सभ्यताक प्रारंभहि सँ जे मानवक दुर्बल मनोवृत्तिक द्योतक थिक जकरा संग निष्ठा ,विवेक और विचार कें सतत द्वन्द्व रहलैक अछि एहि महा-गाथाक प्रधान लक्ष्य थिक। सलहेस मोरंग सँ मुंगेर आबि कें पकड़ियाक राजा भीमसेनक चौकीदारी कएलनि। चूहरमल राजाक महल मे चोरि कएलक जकर अभियोग सलहेस पर लागलनि। सलहेस कें कारावास प्राप्त भेल। दौना मालिन जे सलहेसक रूप एवं गुण पर आकृष्ट छलीह असावरी देवीक कृपा सँ तथा अपन चातुर्य सँ चोरिक माल और चोर कें पकड़ाओल। चूहरमल दण्डित भेल तथा दौना और राजा सलहेस सुख पूर्वक रहए लगलाह।

सलहेसक गाथा चारि भाग मे विभक्त अछि जकरा किला कहल जाइछ। ई चारू महिसौथा किला, वाघगढ़ किला योगिनी किला, आ पकड़िया किला थिक जकरा सभहक सम्बन्ध अध्याय सँ अछि।

ऐतिहासिकता :

सलहेस शब्द केँ डा० ब्रजकिशोर वर्मा मणिपद्म[1] शैलेसक परिवर्तित रूप मानैत छथि जकर अर्थ होइछ पहाड़क राजा। डा० वर्माक एहि तरहक सुझाव समीचीन प्रतीत होइछ।

दुसाध शब्द संस्कृतक दुःसाध्य तथा दौःसाधिक शब्दक परिवर्तित रूप थिक। रीजले एहि जातिक सम्बन्ध द्रविड़ जाति सँ स्थापित करैत छथि जे हिन्दू संस्कृति केँ अपनाय सनातन धर्मक अंग बनल। ई जाति दुर्धर्ष एवं बड़ प्रबल छल जकरा वश करब कठिन छलैक तेँ एहि जातिक नामकरण दुसाध भेल। एहि जातिक देवता राहु और केतु थिकाह जनिकर भय सूर्य और चन्द्रमों केँ होइत छनि। श्री रीडक अनुसार क्लाइबक सेनाक सिपाही मे विशेषतः एहि जातिक लोक छल जकर वीरता बड़ प्रख्यात छलैक अतएव किरात जाति सँ निवासित बिहारक उत्तरी-पूर्वी सीमा जकरा सतत तिब्बत एवं चीनक मानख्मेर जातिक जातिक भय छलैक ओकर रक्षाक भारो तँ ओहने दुर्घट जाति पर सौंपल जायब सम्भव छल जकरा पहाड़ और जंगल पर समान अधिकार रहैक।

सलहेसक गाथाक सम्बन्ध यद्यपि सातम शताब्दीक चीनक शानवंशी आक्रमण सँ नहि अछि[2] तथापि उत्कर्ष किरातशक्तिक आदंक तँ सदिखन मिथिला केँ बनले टा रहैत छलैक।

---

१. राजा सलहेस (ऐतिहासिक उपन्यास), भूमिका पृ० क

२. चीनक शान वंशक इतिहास सँ ज्ञात होइछ जे नेपालक राजा नरेन्द्रदेव अपन तिब्बती एवं चीनी मित्र लोकनि केँ नेपाल अनलनि। नरेन्द्र देवक एहि कृपाक कारणे सर्वप्रथम चीन केँ नेपालक संग राजनैतिक समझौता भेल तथा हुनकहि माध्यमे चीनीक प्रवेश कन्नौजक राजदरवार मे सेहो भेल जकर प्रथम राजदूत चीनक राजधानी मे ६३९ ई० मे पहुचल। अतएव प्रथम चीनी राजनैतिक दल जे वाँग ह्वेन्तसांगक नेतृत्व मे ६४३ ई० मे नेपालक बेनेपा कुटीक मार्ग सँ पाटन आयल ओकरा मिथिलाक राजा अर्जुन अपमानित कएल।

श्री मणिपद्म राजा सलहेसक गाथा कें पाँचम छठम शताब्दीक मानैत छथि।[1] ग्रियर्सन द्वारा ज० ए० सो० आ० बंगाल १८८८क विशेषांक पृष्ठ 3-२० मे गाथाक जे अंश प्रकाशित अछि ओहि मे वर्णित शब्द जेना पृष्ठ 3क शब्द अचरा, पृष्ठ ८क शब्द तमसुक, हुकुम, पृष्ठ ९मक इज्जतिक अकरार, हाजिर, कसवीन, अल्हा गौवे लागल, तमासा, पृ० १०क मुदै, पृष्ठ ११क मोसाफिर, रोज, हरज, खीस, सीरकी आदि कतिपय एहन शब्द सभ अछि जे फारसी तथा अरबीक शब्द थिक। एकर अतिरिक्त अल्हा और उदलक समयो तँ इएह छल। अतएव सलहेसक समय पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीक होयब समीचीन बुझि पड़ैछ। राजा सलहेस जाहि पकड़िया राज्यक चौकीदारी कें स्वीकार कएल ओकरा प्रसंग मे श्री ओ० मैले मुँगेर डिस्ट्रीक्ट गजेटियरक पृष्ठ २५२ मे एवंक्रमें उल्लेख कएलनि अछि :—

"पकड़िया परगना मुँगेरक उत्तर पूर्व मे ५०६ वर्गमील मे स्थित गोगरी थानाक अन्तर्गत अछि। ई क्षेत्र एक प्राचीन जातिक जमिंदार वंशक अधिकारमे छल जकरा प्रसंगक इतिहास १७५७ ई० मे भागलपुरक जिलाधीश ए० अदिर संग्रह कएने छलाह। कहल जाइछ जे एहि क्षेत्र मे भूमिहीन दुसाध जातिक प्रधानता छलैक जकर लूट-पाट सँ आस-पासक क्षेत्र सतत आतंकित रहैत छल। अन्त मे ई० सनक पन्द्रहम शताब्दीक अन्त मे दिल्लीक बादशाह विश्वनाथ राय नामक एक गोट राजपुत कें अनुशासन स्थापित करबाक हेतु पठौलनि जकरा ओ सफलता पूर्वक सम्पादन कएलनि। फलस्वरूप हुनका ओहि क्षेत्रक जमिंदारी देल गेल।"

उपर्युक्त वर्णन सँ निस्सृत होइछ जे गंगाकात सँ लए कए पहाड़ धरिक व्यापारक मार्ग मे पड़बाक कारणें पकड़ियाक स्थान समृद्धशाली छल जकरा

वाँग नेपाल आपस भए गेल तथा ओतए सँ नेपाली, तिब्बती और चीनी सम्मिलित सेना मिथिला पर आक्रमण कएल। राजा अर्जुन कें बंदी बनाय चीन लए गेल तथा मिथिला पर किछु कालक हेतु तिब्बती शासन स्थापित भेल (डी० आर० रेगमी, अ० ए० एम० नेपाल, पृष्ठ ११६)

१. राजा सलहेस, भूमिका, पृष्ठ ख

चूहरमल एवं ओकरा दलक आन-आन चोर-डाकूक सर्वदा आतंक रहैत छलैक।

चूहरमलक पराक्रम तेहेन ने प्रवल छल जे ओ समयानुसार राज-षडयंत्र मे सेहो भाग लैत छल। सहर्षा जिला मे भटनियाँक समीप समदागढ़क भग्नावशेष अहुखन अछि। कहल जाइछ जे षडयंत्र कए समदागढ़क राजपरिवार कें विष द्वारा नष्ट कए तस्कर तरुमल कें समदाराजक सिंहासन पर सुप्रतिष्ठित कएल गेल। एहि गढ़क भग्नावशेषक अध्ययन सँ सेहो पुष्टि होइछ जे ई घटना चौदहम-पन्द्रहम शताब्दी सँ सम्बद्ध अछि।

विराटनगर राज तथा पकड़िया राज मे यद्यपि मित्रता छल तथा विराटनगरक राजा कुलेश्वर सलहेसक छोट भाय वुद्धेश्वरक स्वसुर रहथिन तथापि चूहरमलक प्रपञ्च मे आबि पकड़िया राजक सहयोग सँ विराटनगर पर आक्रमण भेल। विराटनगर जोगवोनीक समीपक मोरंगक प्रसिद्ध नगर थिक।

जंगल और पहाड़क प्रतापी राजा सलहेसक राजधानी महिसौथाक भग्नावशेष अहुखन सप्तरी मे विद्यमान अछि। सरीवनक सम्बन्ध सररा-मदना सँ थिक; छजना क्षेत्रक सम्बन्ध निर्मली सँ एक मील पश्चिमक छजना गाम सँ अछि तथा तरेगनाक गढेश्वर राजा महेश्वर भंडारीक गढ़क भग्नावशेष सप्तरीक ;मानराजा मे अहुखन उपलब्ध अछि। कहल जाइछ जे मानराजाक तमोलिनिक पान बड़ प्रख्यात छल।

एवंक्रमें नदीक नाम मे कमला, बलान, खुट्टी, गागन, वाघमती, परुआने इत्यादि नाम पाओल जाइछ जे सभ कें सभ मिथिलाक प्रसिद्ध आधुनिक नदी थिक।

मणिपद्म द्वारा रचित राजा सलहेस मे दौना मालिनक स्थान पर कुसुमा मालिनकें मुख्य नायिकाक रूप मे चित्रण कएल गेल अछि किन्तु ग्रियर्सन द्वारा प्रकाशित गाथा तथा हम जे स्वतः सुनने छी ओहि मे दौना मालिन नायिकाक रूप मे वर्णित अछि।

ललितासहस्त्रनाम मे[१] वर्ण कें पृथक-पृथक तथा वर्णमाला कें समुदित रूप

1. श्लोक १६७

मे मातृका कहल गेल अछि। अकार सँ क्षकार पर्यन्त विन्दु युक्त मातृका परशुरामकल्पसूत्रक[१] अनुसार सर्वज्ञताकरी विद्या थिक। स्वच्छन्दतन्त्रक[२]—'न विद्या मातृका परा' वाक्यक अनुसार मातृकासँ पैघ आन कोनो विद्यानहि अछि। मातृकाक संख्या पचास अछि। मातृकाक एहि रूपकेँ कामधेनु तन्त्र पचास यूवती मानैत अछि जे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे व्याप्त अछि। युवती कईगण ब्रह्मरूप थिकीह। मालिनीविजयोत्तरतन्त्र मे नौ वर्ग मे विभक्त शब्दराशिक पारस्परिक मेल सँ भिन्न-योनि स्वरूप केँ मालिनी कहल गेल अछि।[३] परात्रिंशिकाक[४] अनुसार भगवती मालिनी मुख्य शाक्त रूप धारिणी थिकीह। वीज और योनिक संघट्ट सँ उत्पन्न ई शक्ति सम्पूर्ण कामना केँ पूर्ण केनिहारि थिकीह। ई रूद्र और शक्तिक माला सँ युक्त छथि। अतएव हिनका मालिनी कहल जाइत छनि। सिद्धि और मोक्ष दुहु हिनका द्वारा प्राप्त होइछ।

अतएव मालिनक स्थान मिथिलाक तान्त्रिक साधना मे बड़ विशिष्ट छल। ई लोकनि रूप, गुण, यौवन, मति और गति मे सर्वोपरि तँ छलीहे संगहि अपन चेतनाक उद्यानसँ साधना द्वारा विश्वमोहिनी माला प्रस्तुत करैत छलीह।

मध्यकालीन मिथिला मे जखन तंत्र-मन्त्रक प्रधानता छल तँ तांत्रिक प्रक्रियाक संपादन मे मालिन मुद्राक रूप मे प्रयुक्त होइत छलीह। राजा सलहेसक उपन्यास मे दौना, कुसुमा, हिरिया और जिरियाक चर्चा चारू बहिनिक रूप मे अछि किन्तु दीना-भदरीक गाथा मे हिरिया केँ तमोलिन और जिरिया केँ लोहारिन कहल गेल अछि।

मिथिला मे नैना जोगिन तथा हिरिया जिरियाक दोहायदेबाक परम्परा बड़ विशिष्ट अछि। हिनका लोकनिक सम्बन्ध कामरूप कामख्या सँ सेहो छल। प्रायः मन्त्र मे हिरिया-जिरिया केँ बंगालीन कहल गेल अछि। मालिन एक गोट सम्प्रदाय छल जकर सम्बन्ध सम्पूर्ण पूर्वी भारत सँ छलैक।

---

१. २१. दशम खण्ड
२. पटल ११, श्लोक १९९
३. द्विधा च नवधा चैव पञ्चाशद्धा च मालिनी, तृ० अधिकार
४. टिप्पणी, पृष्ठ १२२

कालिका पुराण जे ई० सनक एगारहम श.ताब्दी मे असम मे लिखल गेल योगिनीपूजाक उद्भव, विकास और साधनाक क्रमक प्रसंग मे विशद वर्णन करैत अछि। एहि पुराणक अनुसार तांत्रिक पीठक उद्भव उड़ीसा मे भेल।[१] एहि कल्पनाक पुष्टि हीरापुरक चौंसिठ योगिनीक प्रतिमा,[२] जाजपुरक बीरजाक मन्दिर, जैपुरक सप्तमातृकाक मन्दिर आदि कतिपय मन्दिर एवं प्रतिमा सँ होइत अछि।[3]

मिथिलाक व्यावहारिक लोकगीत मे मालिनक वर्णन शृंगारिक रूप मे उपलब्ध अछि कोहवर गीतक एहि अंश मे :—

तोहरो सँ सुन्दर धनि मालिनक बेटिया
तकरा सँ जोड़ल सिनेह हे।

पुनः

राजा वेटा हँसि बोलय
मालिन बेटी विहुँसि बोलय
एतवेक मे जोड़ल सिनेह हे।

आदि गीत मे मालिनक रूप ज्योत्सनाक संग मोहपाशक वर्णन अछि। रूप, गुण, चातुर्य एवं मधुरिमाक अतिरिक्त मोहन और वशीकरण मे मालिन प्रवीण होइत छलीह जकर साकार रूप सम्पूर्ण सुषुमाक आगरि दौना और कुसुमा छलीह। गाथाक एवंक्रमक पद :—

बारह बरिस सँ आचर बन्हलौं,
वयस बीति गेल केश तिलकि गेल,
तैयो ने निरदैया सुपुरुख बूझाइ रे की ॥

मे सलहेसक प्रति दौनाक उन्मत्त भावनाक परिचय भेटैत अछि।

सलहेसक गाथा मे चारू बहिनि मालिन कें तरेगनाक गढ़ेश्वर राजा महेश्वर भण्डारीक बेटीक रूप मे उल्लेख कएल गेल अछि जनिकर संबंध योगिनी गुफा सँ छल।

---

१. दि० ओ० हि० रि० ज०, अंक २, भा० १, पृष्ठ २३-४४
२. ओतहि
३. ओतहि

मालिनक संबंध मातृका सँ अछि और वर्ण जे मातृकाक संतान थिक ओकर सम्बन्ध मालिन बेटी सँ अछि। मातृका सात छथि जनिकर सम्बन्ध साक्षात उमा सँ थिक। एकर अतिरिक्त मालिन सम्प्रदायक सम्बन्ध तांत्रिक साधना सँ छल और तन्त्रक उद्भव शिव और पार्वती सँ भेल। अतः महेश्वर भण्डारी सँ तात्पर्य शिव सँ अछि तथा योगिनी गुफा प्रायः उड़ीसाक आधुनिक हीरापुरक गुफा थिक जतए चौंसठि प्रकारक भिन्न-भिन्न योगिनीक प्रतिमा अहुखन सुरक्षित अछि।

वाघगढ़क राजमाता बनसप्ती जे सलहेसक बहिन छलीह मिथिलाक जन-जीवन मे बड़ प्रख्यात छथि। मिथिलाक घरे-घर घुमनिहारि बेटी वन-सप्ती दाईक नामे उपालम्भ होइत छथि। वस्तुतः जंगलक सम्पूर्ण भू-भागक हुनका ज्ञान छलनि तथा प्रतिदिन सात टा वोन मे घूमलाक कारणे हुनकर नाम वनसप्ती भेल। वस्तुतः हिनकर सम्बन्ध वन-देवी सँ अछि।

भाषा :

भेल भिनसरवा ठाढ़ि दरवाजा मालिन करजोरि
मिनती करैय देव मुनिक नाम,
सुनु इन्द्रासन छपन कोटि देवता जे,
इन्द्र जनम देलन्हि,
छठि राति सौइरी घर मे ताकि दिन लिखदेल सलहेसन सन वर।
हुनक कारण आँचर बान्हलौं,
परपुरुष मुँह नहि देखलौंह,
जनम पाय सिन्दुर नहि केलौंह,
जाहि स्वामीक कारण,
काँच बाँसक कोहबर बन्हलौंह,
लाल पलंग पर सेज ओछौलौंह,
सिकिआ चीरिकै बेनिया बनौलौंह।
गौरी आओत नाहि ॥

अपर्युक्त गीत मे दौनाक मनोवृत्ति मे संकल्प एवं पतिप्रेमक अभाव मे

विह्वलताक आभास भेटैत अछि। वस्तुत: दौनाक आचरण प्रोषितपतिका नारीक थिक जकर पतिक अभाव मे जीवन भार सन बुझना जाइछ :—

हिआ हरि कें चललीह मालिन
कनैत चललीह मालिन स्वामीक उदेस।
डेगे डेगे चललीह जोजन भरि।
जाय जुमलीह अपना फुलवारी,
फूल देखि धरती खसलि मुरझाए,
तखन लोटि लोटि कनै लगलीह फुलवारी मे।

उपर्युक्त पद मे विरहविदग्धा नारीक मनोदशाक विलक्षण वर्णन अछि। सलहेसक प्रेम मे उन्मत्त दौनाक पति-मिलनक उत्कण्ठा एहि मे सन्निहित अछि।

पकड़ियाक राजभवन मे चोरीक सम्वाद रानी हँसावती राजा भीमसेन कें एवंक्रमें दैत छथि :—

कानि कानि अँचरा फारि कागज बनौलन्हि।
नैनाक काजर पोछि कै मोसि बनौलन्हि।
बाम कनगुरिया कें चीरि कलम बनौलन्हि।

आँचर फारिकें कागज बनेबाक, आँखिक काजर कें मोसि बनेनाक तथा कनगुरिया आँगुरक शोणित सँ पत्र लिखवाक परम्परा भारतीय संस्कृति मे बड़ प्राचीन अछि। एहि तरहक पत्र प्रधानतः प्रोषितपतिका नायिका द्वारा परदेशी पति कें लिखल जाइत अछि जकर सम्बन्ध वशीकरण सँ थिक।

दौना मालिनक चातुर्यक प्रसंग मे गाथाक एवंक्रमक पद अछि :—

सोलहो सिंगार कैलन्हि,
जादूक फूलडाली लैलन्हि,
रंगविरंगक फूल तोरलैन्ह,
काँचे लौंग अराँची तोरलैन्ह,
चललीह स्वामीक उदेस।

तथा पुन:

दौना मालिन दछिनक चीर पहिर ले लैन्ह

पाटी समारि लेलैन्ह ।
नैना काजर कैलैन्ह,
सीके सीके मिसी बैसा लेलैन्ह,
हाथ मे वाँक पहिर लेलैन्ह,
पैर मे काड़ा पहिर लेलैन्ह,
माँग मे तारचन्द टिकुली साटि लेलैन्ह,
असले कसवीन बनि गेलीह ।

संकटकाल मे भारतीय रमणीक चातुर्य, बुद्धि और नीति बड़ श्लाघनीय रहलैक अछि जे अपन कौशल सँ पतिक तथा राष्ट्रक रक्षा कएलक अछि । कूहरमलक प्रपंच केँ पराजित कए चोर और माल केँ उपस्थित करब असाधारण छल ।

गंगा पार करबाक हेतु गंगा द्वारा नाह भसिआ गेला पर जखन कोनो आन जोगार नहि भए सकलैक तकर पश्चातक पद थिक :—

गराक चन्द्रहार उतारि कै जल मे राखि देल,
ताहि पर चढ़ि लेल नट-नटिन,
भासल जाय चन्द्रहार,
ताहि पर चढ़ल नट-नटिन,
पार उतरि गेल मगह मे,
मगह सँ मुँगेर जुमल,
रातिविराति वलबे पहुँचल,
मोकामा गाम मे गाछी,
ताकि कै डेरा खसाए देल,
तखन सभ वस्तु टाँगि देल,
सिरकी तानि देल ।

एहि पद मे दौनाक साधनाक दिग्दर्शन होइछ ।

वस्तुतः 'राजा सलहेस' मैथिल कंठक महाकाव्यक रूपमे एकटा अमर गाथा थिक जकर मूल गाथाक प्रकाशन भेलहि पर ऐतिहासिक एवं आन-आन सांस्कृतिक तथ्य केँ ताकल जाए सकैछ ।

दीना-भदरी

जोगिया-जाँजरि नगर मे दीना और भदरी दुई भाय रहैत छलाह। हुनका लोकनिक शौर्य-शक्ति सँ ओहि नगरक लोक बड़ त्राषित छल। ओहि नगर मे एक गोट धाइम छल। ओ दीना-भद्री केँ अपन खेत मे जन देबाक हेतु कहलक। दीना और भदरी जनिका दासताक जीवन सँ घृणा तथा स्वच्छन्द और स्वतन्त्र जीवन प्रिय छलनि धाइमक एहि विचार केँ अस्वीकार कए ओकरा अनादर कएलथिन।

शिकारक प्रवृत्ति मुसहर जाति मध्य स्वभावत: पाओल जाइछ। कृषि-कर्मक अपेक्षा शिकार पर जीवन-यापन करब मुसहरक सहज कर्म थिक। दीना और भदरी अपन माम बहोरनक संग स्वभाविक आकांक्षाक वशीभूत भए कटैया-वन मे शिकारक निमित्त आने दिन जकाँ ओहू दिन गेलाह। मार्ग मे कतिपय अमंगल बाधा उपस्थित भेलनि किन्तु दृढ़ संकल्प व्यक्ति बाधा सँ कतहु त्राषित भेल अछि! दीना-भदरी सेहो ओहि बाधाक अवज्ञा कए कजरा नदी के पार कए कटैया वन मे पहुँचलाह।

भवितव्यता आगू-आगू चलैत अछि जे मनुष्य केँ आन्हर बना दैत अछि। कटैया-वनक हालत सेहो दीना-भदरीक हेतु एहि रूपक छल। सर्वत्र शिकारक अभाव छलैक। दृश्य भयानक छल और हुनका लोकनिक मन उछन्नर सन लगैत छलनि। एहि अभ्यन्तर दक्षिण दिशि सँ पोटरा गिदर वौरम नदी मे पानि पीबाक हेतु आयल। भदरी पोटरा केँ देखि तीर चलौलक। पोटरा धराशायी भेल। किन्तु राजा सलहेस ओकरा अमृत दए पुनर्जीवित कएलनि। एवंक्रमें पोटराक संग दीना-भदरींक अनेक भयानक युद्ध भेल किन्तु सतत सलहेस अपन कृपा सँ अमृत दए ओकरा पुनर्जीवन दैत रहलाह तथा अन्त मे पोटरा दीना-भदरी केँ मारि देल।

जोगिया नगर मे दीना-भद्रीक मृत्युक सम्वाद केँ अहिरा गोआर अनलक।

ओहि दुहु भायक श्राद्ध-कर्म भेल तथा नगरक राज-काज सभ पूर्वे जकाँ चलए लागल।

दीना-भदरीक प्रेतात्मा केँ जोगिया नगरक लोकक जीवन, कार्यक्रम तथा आन-आन दिनचर्या केँ देखबाक उत्सुकता भेलनि। फलस्वरूप दुहुप्रेत योगीक भेष धारण कएलनि तथा जोगिया नगर अएलाह। नगरक सम्पूर्ण वृत्तान्त बुझलाक उपरान्त ओ लोकनि अपन माय-बाप सँ भेंट कएलनि।

दीना-भदरीक प्रेतात्मा देवहाधारक कातक दौरा गामक हिरिया तमोलिन और जिरिया लोहारिन जे ओहि दुहु भायक शौर्य, सौंदर्य और शील पर अपना केँ निछावर कए देने छलीह ओकरा लोकनि केँ हरि अपन प्रेयसी बनौलनि।

तदुपरान्त दीना-भदरोक ध्यान वगहा गाम दिशि आकृष्ट भेल। ओतए ताहिर मीयाँ नामक एक गोट कुजड़ा रहैत छल। ताहिर केँ सीना और बेना नामक दुई गोट कामधेनु गाय छल। ओहि गायक चरवाहक नाम छल गुलामी जट। गुलामीक शौर्यक डंका बजैत छल। ओकरा समक्ष ककरहु ठाढ़ हेबाक साहस नहि छलैक। ओ बराडीहक बथान मे ओहि गाय केँ चरबैत छल। ताहिर मीयाँ केँ फेकुनी नामक एक गोट बेटी छल। ओ बड़ पैघ जादूगरनी छलीह। ओकरे योगक बलेँ गुलामीजट ककरो किछु ने लगबैत छल।

दीना और भदरी गुलामीक ओतए आयल तथा सोना और बेनाक एक चुरुक दुध पीबाक हेतु मँगलक। गुलामी जकरा अपन पराक्रम पर गर्व एवं रणनीति पर अहं छलैक तिरस्कारक मुद्रा मे इन्कार कएलक।

गुलामीक तिरस्कार युक्त इन्कार सँ दीना और भदरी केँ बड़ क्रोध भेलनि। ओ पोटरा गिदरक रूप केँ धरि गायक बीच मे हुलकय लगलाह। गुलामी केँ एवंक्रमक सम्बाद प्राप्त भेल। ओ पोटराक संग युद्धक हेतु उद्यत भेल। पोटराक रूप मे दीना और भदरी केँ ओहि युद्ध मे सलहेसक सहयोग प्राप्त छलनि। गुलामीक सभटा कौशलक अन्त भए गेल। अन्त मे दीना और भदरी केँ चिह्नलाक उपरान्त गुलामी हिनकर अधीनता केँ स्वीकार कए सतत् अपन सहयोग देबाक बचन देल।

दीना और भदरीक अन्तिम युद्ध कुनौलीक जोरावर सिंह नामक राजपूत सँ भेल। जोरावर सिंहक शौर्यक सोर सेहो दूर-दूर तक प्रसारित छल। ओकरा अखड़ाहा मे सातसय पट्ठा प्रतिदिन कुश्ती लड़ैत छल। जोरावर सिंहक अनाचार और अत्याचार सँ समस्त दिशा आतंकित छल। ओ पूरबक कनियाँ केँ पश्चिम; पश्चिमक कनियाँ केँ पूरब, दक्षिणक कनियाँ केँ उत्तर और उत्तरक कनियाँ केँ दक्षिण नहि जाए दैत छल। ओ जबरदस्ती ओकरा रोकि अपन गृह अनैत छल।

दीना और भदरीक दुनु महफा केँ जकरा मे हिरिया और जिरिया छलीह रोकि कुनौली लए जेबाक हेतु कहलक। गुलामी और जोरावर सिंह मे कुश्ती बाझि गेल। दुहु दिशि सँ दाव-पेंच चलए लागल। अन्त मे जोरावर सिंह पछड़ि गेल। भदरी जोरावर केँ बान्हि देल तथा पश्चात् ओकरा ओ मारलनि।

ऐतिहासिकता :

ग्रियर्सन द्वरा जे० डी० एम० जी० अंक ३९ पृ० ६१७—६७१ मे दीना-भदरीक गाथाक मैथिली रूप जे प्रकाशित अछि ओकर भाषा, विषयवस्तु तथा शब्द विन्यास सँ प्रतीत होइछ जे ई गाथा सोलहम-सत्तरहम शताब्दी सँ बेसी पुरान नहि भए सकैछ। दीना-भदरी कबन्धक 'मीर सुलतान' (पद ४), 'जोगिया कैल गुजरान' (पद ५४), एक बेर दादा हुकुम दिअ' (पद २४७), देलन्हि नालिस कराय' (२५२), 'फजिहति कएलक' (२७३), तथा 'गामक गुमस्ता' (पद ३४९) इत्यादि कतिपय शब्द सभ एहन अछि जे अरबी और फारसीक शब्द थिक जकर प्रचार और प्रसार मिथिला मे मुसलमानी शासनकाल मे भेल।

गाथा मे वर्णित नाम जेना थारु दोनवार, निरसो, बुधना-रजना, रतन मोती, कालू सदा, हिरिया आ जिरिया, ताहिर मीयाँ, गुलामी जट, फेकुनी तथा जोरावर सिंह आदि मे सेहो आधुनिकतेक बोध होइछ। हिरिया आ जिरियाक स्थान मिथिलाक जनजीवन मे जादू-टोनाक क्षेत्र मे बड़ विशिष्ट अछि।

गाम एवं नदीक नाम मे सेहो कोनो प्राचीनत्वक बोध नहि भए आधुनिकतेक बोध होइत अछि। दीना-भदरीक जन्मभूमि जोगिया-जाँजरि नेपाल

तराय (सप्तरीक) एक गाम थिक । कटैयाक सम्बन्ध सप्तरीक कटैया गाम सँ अछि जतए कजरा नदी अहुखन बहैत अछि । बौरम नदी एहि गामक समीपें मे बहैत अछि । बगहा गाम तथा उरसी डीह दरभंगा जिलाक लोकही थाना मे अछि । देवहा धारक सम्बन्ध घोड़दह धार सँ अछि तथा दौराक सम्बन्ध दौरीपट्टी सँ अछि । कनौली नेपाल तरायक सीमा पर स्थित कुनौली बाजार थिक ।

भाषा :

दीना-भदरीक गाथाक भाषा मिथिलाक जन-जातिक भाषा थिक जकर सम्बन्ध मिथिलाक लोकजीवन सँ अछि :—

कौन गरू परलौ, हौ धामी बड़ भोरे छेंकल दुआर ।
अपन बहु बेटी देखलन्हि घर सुताए ।
हमर बेटी पुतहु रखलन्हि नाँगट उघार ।
थारू दोनवार जन भेल तैयार ।
आजुक दिन दीनभद्री कें दैह मदति ।
सभके देवौ हम चारिसेर बोनि ।
दीना-भदरी कें देवौ पसेरी भरि बोनि । (२६-३१)

उपर्युक्त पद मिथिलाक लोकजीवन मे बड़ महत्त्वक अछि । मिथिलांचल मे जन कें चारि सेर बोनि देबाक परम्परा बड़ पुरान अछि । यद्यपि एहि परिपाटीक उद्भव कोना आ कहिया भेल ई कहब कठिन थिक किन्तु एकर पृथक इतिहास अछि । एकर अतिरिक्त गाथाक निम्नलिखित :—

कवहु ने कैल खुरपी कोदारि बोनि ।
कहियो ने जानिऔ, हो धामी, पैंच-उधार ।।

पदक सम्बन्ध मिथिलाक कृषि-जीवन सँ अछि । खेत कें कमौला आ कोरले सँ तँ उपजा होइछ । एहि हेतु खुरपी और कोदारि अनिवार्य होइछ । पैंच आ उधार सँ तात्पर्य थिक कृषिक एक विशिष्ट परम्परा सँ । मिथिला मे

गृहस्थ्य अपन जन कें आवश्यकता भेला पर ऋण दैत अछि जकरा हेतु सुदि नहि लेल जाइछ। गाथाक "पँच-उधार"क सम्बन्ध एहि ऋण सँ अछि।

दीना और भदरीक मृत्युक उपरान्त जोगिया नगरक स्त्री लोकनि जे पूर्ण अनुशासित छलीह अनुशासनक अभाव मे मर्यादाक उलंघन कए स्वच्छन्द और स्वतंत्र भए गेलीह जकर एवंक्रमक उल्लेख पाओल जाइछ :—

कोँचा झुनकी देखि बड़ अजगुत।
सरबा झुनकी, ढकना झुनकी, खोँइछा झुनकी।।
खोपा झुनकी, ऊखरि झुनकी, मुसर झुनकी।
सूप झुनकी, चालनि झुनकी, खुरपी झुनकी।
हाँसू झुनकी- बँसुली झुनकी।।
काजर सिन्दुर सिंगार कैलक।। (१६६-१७४)

उपर्युक्त पद मे कोँचा, खोपा, सूप, चालनि, खुरपी, हाँसू आदि कें सजेबाक जाहि विधानक चर्चा उपलब्ध अछि ओ सर्वथा नवीन तँ अछिए संगहि संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंशक कोनो ग्रन्थ मे एहि तरहक श्रृंगारिक प्रवृत्तिक उल्लेख नहि उपलब्ध अछि।

कुनौलीक जोरावरसिंहक अनाचार एवं अत्याचारक प्रसंग मे गाथा मे एहि तरहक उल्लेख अछि :—

जोरावर सिंह राजपूत पुरुबक कनियाँ।
पच्छिम नहि जाय दैत अछि।
पच्छिमक कनियाँ पुरुब नहिँ जाय दैत अछि।
दछिनक कनियाँ उत्तर नाहि जाय दैत अछि।
उत्तरक कनियाँ दछिन नहि जाय दैत अछि।।

दीना-भदरीक गाथा मे कुल सातटा परिच्छेद अछि। पहिल परिच्छेद दीना-भदरी कवन्द सँ प्रारम्भ भए धामीक संग वाद-विवाद तथा कटैया शिकारक यात्राक ओरियाओनक प्रसंगक अछि। दोसर परिच्छेद मे माम बोहरनक संग दीना-भदरीक कटैया वनक माया तथा पोटरा गिदर द्वारा दीना-भदरीक

मृत्युक प्रसंगक उल्लेख अछि । तेसर परिच्छेद मे जोगिया गाम मे दीना और भदरीक मृत्युक सम्वादक वर्णन अछि । चारिम परिच्छेद मे दीना-भदरीक प्रेतात्मा कें योगी भेष मे जोगिया गामक यात्रा तथा अपन माय-बाप कें दर्शन देबाक विषय मे उल्लेख अछि । पाँचम परिच्छेद मे हिरिया तमोलिन और जिरिया लोहारिन के हरि लए जेबाक प्रसंगक वर्णन अछि । परिच्छेद छठम मे वगहाक ताहिर मीयाँ तथा गुलामी जट सँ युद्ध कए ओकर सहायता कें प्राप्त करबाक प्रसंगक वर्णन अछि । सातम परिच्छेदक जे अन्तिम परिच्छेद थिक सम्बन्ध कुनौलीक जोरावरसिंहक संग दीना-भदरी और गुलामी जटक लड़ाईक प्रसंगक वर्णन अछि ।

वस्तुतः असाधारण वीरता, जन कल्याणक भावना तथा स्वतंत्र विचार-धाराक निमित्त मुसहर जातिक लोक दीना और भदरी के देवत्वप्रदान कए अमरत्व प्रदान कएलनि अछि ।

राजा गोपीचन्द

गोपीचन्दक लोकगाथा यद्यपि भारतक विभिन्न भाग मे प्रसारित अछि किन्तु एहि गाथाक उद्भवक श्रेय बंगाल कें देल जाइछ। गाथाक नामकरण प्रधान नायक गोपीचन्दक नामपर भेल। राजा गोपीचन्दक जन्म मैनामती सँ भेल जे राजा माणिकचन्दक रानी छलीह। गाथा से मैनामती कें राजा लिकत-चन्दक बेटी कहल गेल अछि जनिकर प्रारम्भक नाम गाथाक किछु रूपान्तर मे तँ शिशुमती और किछु मे सुवदनी कहल गेल अछि। तिब्बती परम्परा मैनामती के भर्त्तृहरिक बहिनक रूप मे उल्लेख कएलक अछि।

गाथा मे कहल गेल अछि जे मैनामती जखन केवल नौ वर्षक कुमारि कन्या छलीह तखनहि गुरु गोरखनाथ सँ महाज्ञानक दीक्षा लेलनि। एहि अवसर पर गोरखनाथ मात्र बारहे दण्ड मे बड़क बीआ सँ एक गोट विशाल वट-वृक्षक निर्माण कएलनि तथा एहि दीक्षा मे बारह कड़ोर योगी अपन तेरह कड़ोर शिष्यक संग सम्मिलित भेलाह हुनका लोकनिक भोजनक हेतुयें यद्यपि एके दाना चाउर रान्हल गेल ओ ततेक ने पर्याप्त भेल जे ओलोकनि भरि पेट तँ भोजन कएलन्हि तथापि ओहि मे सँ एक गोटाक जोगरक भोजन बँचिये गेल।

मैनामतीक दीक्षाक ऊपरान्त गुरु गोरखनाथक भविष्यवाणी भेल जे मृत्यु मैनामतीक ऊपर कथमपि अपन हाथ नहि पसारत तथा पुनः ओ कहलथिन जे मैनामती ने तँ आगि मे जड़तीह, ने पानि मे सड़तीह आ ने अस्त्र-सस्त्र सँ काटले जयतीह। जँ हुनकर इच्छा दिन मे मरबाक हेतनि तँ ओ सूर्यकें बान्हि सूर्योदय कें रोकि देताह, जँ ओ घर मे मरए चाहतीह तँ ओ यमकें बान्हि घरक अन्दर हुनकर प्रवेश कें रोकि देतीह तथा जँ ओ खड्ग सँ कटि कए मरए चाहती तँ ओ चण्डी कें बान्हि कें रखताह। अर्थात् जाबत धरि सूर्य और चान रहत ताबतधरि मैनामतियो अमर रहतीह।

एवंक्रमें मैनामती गोरखनाथ सँ दीक्षा लए एक गोट प्रख्यात डाकिनी भए सहजज्ञानक स्वामिनी भेलीह ।

कहल जाइछ जे मैनामती माणिकचन्द सँ पृथक फुरुसानगर मे रहैत छलीह । एहि प्रसंगक गाथाक वाक्य एहि तरहक अछि: –

राजा राज करै भोगै सुख राजधानी अन्दर ।
मयना के घर बान्हि देल फरुसाक अन्दर ।
राजा राज करै नाना पदारथ खाय ।
मयनामती चरखा काटि जीवन बिताये।

मयनामती अपन साधना सँ माणिकचन्दक मृत्युक प्रसंगक विषय कें पूर्व बूझि गेलीह । अतएव ओ फीरुसानगर सँ राजधानी आबि अपन स्वामी के महा-ज्ञानक दीक्षा देबाक हेतु उद्यत भेलीह । किन्तु माणिकचन्द अपन स्त्री सँ दीक्षा लेब स्वीकार नहि कएल । फलस्वरूप माणिकचन्दक मृत्यु भेल ।

मृत्युक उपरान्त यमराज अपन एक दूत के माणिकचन्दक जान अनबाक हेतु पठौलथिन । मैनामती कें एहि बातक सूचना भेटलनि । ओ हुनका राजाक जानक बदला मे एक गोट घोड़ा दए हुनकर रक्षा कएल । तदुपरान्त यमराज कई गोट दूत कें पठौलनि । मैनामती अपन दासीक प्राण दए पतिक प्राणकें बचौलनि । तत्पश्चात यमराज चारि गोट यमदूत कें पठौलथिन । मैना हुनका लोकनि के आन मायक प्राण दए परबोधलनि । पाँचम दिन यमराज पाँच गोट दूत के पठौलथिन जनिका सभकें मैना मिठाई खेबाक हेतु पाँच-पाँच सौ टाका दए तुष्ट कएलथिन । अन्त मे गोडा यम अएलाह । ओ राजाक प्राण छोड़ि और कथु पर तत्पर नहि भेलाह । एहि पर मैनामती क्रोधें काँपए लगलीह । ओ महामन्त्रक उच्चारण कएलनि । मन्त्रक प्रभाव सँ ओ पहिने तँ चण्डी और तदुपरान्त कालीक रूप ग्रहण कएलनि जनिक हाथ मे एक गोट पैघ खड्ग छल ।। ओ ओहि खड्ग सँ यमदूत सभहक संहार करए लगलीह । गोडा यम और हुनकर ज्येष्ठ भ्राता अवाल यम शिवक ओतए गेलाह तथा एहि प्रसंगक ऊपर हुनका सँ विचार-विमर्ष कएलनि । शिवक

परामर्श भेल जे यम राजाक प्राण मैनामतीक अनुपस्थिति मे आनथि। अतएव मैनामती पानि अनबाक हेतुएँ गेलीह तथा यम कारी भँमरा बनि माणिकचन्दक प्राण लए उड़ि कए यमलोक गेलाह।

मैनामती के एहि प्रपंचक ज्ञान भेलनि तथा ओ गोडा यम के खेहारैत यम लोक ऐलीह। ओ गोडा यम के पकड़ि मारए लगलीह। अन्त मे ओ माणिकचन्दक प्राण के पुनः आपस करबाक हेतु तत्पर भय गेलाह जकरा ओ बाजार मे रखने छलाह। गोडा मैनाक संग हुनकर प्राण के अनबाक निमित्त विदाह भेलाह किन्तु रास्ता मे पराए यमरानीक ओतए शरणागत भेलाह। यमरानी ओकरा पर दया कए घरक एक कोण मे घास-पातक तर मे नुकाए देलथिन। मैनामती के ई बात बुझबा मे ऐलन्हि तथा ओ सापक रूप धरि ओतहु पाछाँ कएलथिन। गोडा मूस बनि गेलाह मैनामती बिलाय बनि मुसके खेहारलनि। गोडा परबा बनि उड़ए लगलाह। मैनामती चिल्हौड़ बनि हुनकर पाछाँ कएलथिन। एवंक्रमें गोडा यम जल, थल और आकाश मे विविधि रूप केँ धरि पड़ाएल फिरथि। अन्त मे मैनामती हुनका पकड़लनि और ओ राजा माणिकचन्दक प्राण के आपस करबाक हेतु उद्यतो भेलाह किन्तु एहि अभ्यन्तर मैनामतीक गुरु गोरखनाथ ओतए उपस्थित भए केँ समझौता करौलथिन तथा निश्चय भेल जे जँ मैनामतो हड़ीफा सँ ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करथि तँ पतिक अभावो मे हुनका एक गोट पुत्र उत्पन्न होयतनि। मैनामती ब्रह्मज्ञान हाड़ीफा सँ प्राप्त कएलनि। फलस्वरूप गोपीचन्दक जन्म भेल।

गाथा मे कहल गेल अछि जे गोपीचन्दक आयु केवल अठारह वर्षक छल। अतएव जखन गोपीचन्द बारह वर्षक भेलाह तँ हुनकर विवाह राजा हरिश्चन्द्रक बेटी अदुना आ पदुना सँ भेल। एहि प्रसंगक गाथाक वाक्य एवंक्रमक अछि :—

"अदुनाक विवाह कैले पदुना केँ पाइल दाने।

विवाहक उपरान्त राजा गोपीचन्द अपन दुहु रानीक संग सुखानुभोग करैत राज करए तँ लगलाह किन्तु मैनामतो केँ गोपीचन्दक विलासपूर्ण जीवन नीक नहि लागनि। अतएव ओ अपन पुत्र सँ कहलनि जे पुरुष केहेन अधम और अबुझ होइत अछि ? ओ बिनु किछु लेने स्त्रीक सेवा टहल करैत

अछि तथा अपना अन्तःकरणक अमोल महारस केँ व्यर्थ गमाए मोहपाश मे आवद्ध भए ओकर अधीनता केँ स्वीकार करैत अछि। स्त्री तँ ओ सिंहनी थिकीह जे पुरषक हार-माँस के तँ पृथक रखैत अछि और महारस के पीवि ओकरा नीरस बनाए दैत अछि और ताहुपर बाघिन सन सतत् पुरुष पर आँखि गुड़ारैत रहैत अछि। धन पुरुषक और ओकर स्वामिनी रहैछ स्त्री और पुरुष निरर्थक ओकर सेवा करैत रहैत अछि। पुरुष अपन हर, बरद और बीया सँ अनका खेत मे काज करैत अछि। हर, बरद और बीया नष्ट होइत छैक और तकर ओकरा कोनो टा चिन्ता नहि। केराक गाछ केँ जँ कीड़ा खाए जाउ तँ ओहि मे केराक घौर कोना फुटतैक ? जँ बाँस केँ कीड़ा फाड़िदौक तँ ओ कखन धरि ठाढ़ रहि सकतैक ? इएह हालत तँ पुरुषहुक थिक। ओकरा स्त्री अपन रूप पाश में बान्हि नष्ट कए दैत अछि। अतएव पिपरक पात सन डोलैत मन केँ जे चित्तक राजा, प्रजा और फान्ह स्वरूप थिक बान्हले सँ चित्त बान्हल जाइछ। गोपीचन्दक गाथा में एहि तथ्यक प्रसंग मे एवंक्रमक उल्लेख अछि :—

विषम काल बन्दे मन के दिए ढ़ाई।
मनकेँ बान्हनहि बौआ सभ पदारथ पाइ॥
संसार माँझ बड़ मन ढेकरैत अछि।
पिपरक पात सन सभ घड़ी डोलैत अछि॥
मन राजा मन प्रजा मन माया फंदा।
मन बान्हु तन चिन्ता सुन गोपी चन्दा॥

अतएव चंचल मन के जीति मायाक फाँस सँ बाहर हेबाक हेतु मैनामती गोपीचन्द केँ हाड़ीफा सँ महाज्ञानक दीक्षा लेबाक हेतु कहलथिन किन्तु गोपीचन्द जे स्त्रीक माया मे पूर्णरूपें निर्लिप्त छलाह हाड़ीफा के प्रपंची बुझलनि। फलस्वरूप ओ हुनका जीवित भूमि खूनि के गाड़ि देल जनिका हुनकर शिष्य काण्हपा (कृष्णाचार्य) ओहि सँ मुक्त कएलथिन।

भूमि सँ जखन हाड़ीफा मुक्त भेलाह तँ ओ गोपीचन्द के देखबाक इच्छा प्रकट कएल। काण्हपा गोपीचन्दक तीन गोट पुतली बनौलनि तथा तीनू बेर

ओ गोपीचन्दक ओहि पुतली कें देखौलथिन जे हड़ीफाक क्रोधाग्नि मे जड़ि कें भष्म भए गेल।

मैनामती सतत् हड़ीफाक प्रशंसा कएल करैत छलीह तथा ओ हुनक अलौकिक यौगिक शक्तिक वर्णनक क्रम मे गोपीचन्दकें कहैत छलीह जे ओ यम कें कतहु पकड़लनि तँ आठ-आठ घंटा तक हुनका मारिते रहैत छथि। एहि सभ सँ तथा रानी अदुना और पदुनाक कहला सँ गोपीचन्द कें मैनामती और हड़ीफाक आचरणक प्रति शंका भेलनि। फलस्वरूप हुनकर विविध प्रकारक परीक्षा भेल। अदुना-पदुनाक[1] कहला सँ राजा गोपीचन्द मैनामती कें धधकैत ज्वाला मे फेकवा देलथिन किन्तु आगि हुनकर वस्त्रोटा कें नहि डाहलक। तदुपरान्त ओ एक गोट बोरा मे बान्हि कें पानि मे फेकबाओल गेलीह किन्तु गंगा स्वत: प्रकट भए हुनका अपन कोर मे लए लेलथिन। एवंक्रमें ओ केश-निर्मित पुल कें पार करबाओल गेलीह, छूरिक धार पर चलबाओल गेलीह, भुस्साक बनल नाव पर चढ़ि नदी पार करबाओल गेलीह किन्तु हुनकर मृत्युक तँ कोना कथा अंगो तक भंग नहि भेलनि। ओ सतत् गोपीचन्द कें इएह कहैत रहलीह जे योगाभ्यास सँ लोक अमरत्व कें प्राप्त करैत अछि। अन्तमे राजा गोपीचन्द हड़ीफा सँ दीक्षा लेब स्वीकार कएल तथा ओ हुनकर दुनू कान कें चौड़ि आहि मे कुण्डल पहिराए योगी बनौलनि। एहि कारणे पश्चात योगीक ओ शाखा कनफटा कहौलक।

हड़ीफा गोपीचन्द सँ बड़ कठिन कार्य करबैत छलाह। जंगल आ पहाड़क दुर्घट आ दुष्टकर मार्ग होइत हुनका चलए पड़ैत छलनि। एक समय हड़ीफा हुनका सँ एक चिलम गाजा मंगलथिन गोपीचन्द गाजा नहि दए सकलथिन। अतएव ओ हुनका हीरा नामक एक गोट वेश्याक हाथें बारह वर्षक हेतु बंधक राखि देल।

---

१. मिथिलाक लोकजीवन मे अदुना आ पदुना लोकोक्तिक रूप मे बड़ प्रख्यात अछि। प्राय: सासु-पुतहु मे झगड़ा होइछ और लोक जँ स्त्रीक कथा कें सत्य मानि माय पर दोषारोपन करैत अछि तँ माय कहितहि अछि जे अदुना-पदुनाक कहने के हमरा की करत वा एहि अदुना-पदुनाक बात तों। पतिअबैत छह इत्यादि।

हीरा गोपीचन्दक रूप-गुण पर आकृष्ट भए अपन अन्त:करण केँ तँ हुनका सौंपल किन्तु जे अपन अपार वैभव, एवं सौंदर्यक ज्योत्सनाकेँ छोड़ि योगी भेलाह ओहि भकजोगनी केँ कोना अपनतिथि ? अतएव प्रत्याघात भेला सँ ओ गोपीचन्द केँ बड़ कष्ट देमए लागलि। एवंक्रमेँ बारह वर्षक कठोर याँचनाक उपरान्त हड़ीफा[1] हुनका स्वतः अपना स्त्री केँ माय कहि भीख अनबाक हेतु कहल। अतएव गोपीचन्द कामदेवक साक्षात अस्त्रसन रूपक एवं स्रष्टाक अनुपम कृति ओतए भिक्षाटनक हेतुएँ अएलाह। अदुना आ पदुनाक यौवन, लावण्य और शृंगार पतिक वियोग मे जे अन्तर्धान भए गेल छल तथा नील कमल सन विशाल नेत्र सँ सतत अश्रुकणक वर्षा होइत रहैत छल, हुलसि केँ दौड़लीह ओर अपन दुनु हाथेँ हुनकर पायर केँ पकड़ि समस्त सौन्दर्य एवं मधुरिमा केँ हुनकर चरण कमल पर उझलि देल। एहि प्रसंगक हुनका लोकनिक गाथाक वाक्य एवंक्रमक अछि :—

नै जाऊ नै जाऊ राजा दूर देशान्तर।
ककरा लेल बान्हलौंह शीतल मंदिर घर॥
बान्हलौंह बगंलाघर के करत निवास।
एहेन वयस मे करब ककर हम आश॥

एवंक्रमेँ विलाप करैत अदुना आ पदुना गोपीचन्द केँ अपन संग लए जेबाक हेतु जखन विवश करए लगलीह तँ गोपीचन्दक प्रतिवादक क्रमक उत्तर भेल जे योगीक जीवन कठोर होइत अछि तथा योगी केँ बाघ-सिंह सँ भरल जंगल पहाड़क बीच होइत जाए पड़ैत अछि। एहि तरहक उपेक्षायुक्त एवं उद्विग्न वचन केँ सूनि रानी अनुपम शील एवं अलौकिक नम्रताक परिचय दए भीख दए विरह और विरति केँ अंगराग बनौलक।

ऐतिहासिकता :

गोपीचन्द और हड़ीफाक ऐतिहासिकताक प्रसंग मे यद्यपि ठोस प्रमाणक अभाव अछि तथापि हिनका लोकनिक इतिहास स्पष्ट अछि।

---

१. मिथिलाक जीवन मे हड़ीफ शब्द कृतघ्न, दुष्ट, वद आदिक अर्थ मे प्रयुक्त होइछ। एहि शब्दक उद्‌भवक आधार गोपीचन्दक गाथा थिक। प्रायः गोपीचन्द प्रति कठोर व्यवहारक हेतुएँ कृष्णचारक ई नाम समाज मध्य विख्यात भेल होयत।

हड़ीफा वा हल्लीफ[1] पादक प्रख्यात नाम जालंधरनाथ छल जे नाथ मार्गक अनुयायी छलाह । स्कन्दपुराणक काशीखण्डमे[2] नव नाथक विन्यासक क्रम मे जालंधर नाथक नाम पाओल जाइछ ।

माहामहोपाध्याय हर प्रसाद शास्त्री द्वारा प्रकाशित बौद्ध गान ओ दोहा मे जाहि चौबीस सिद्धक रचित पद संग्रहीत अछि ओहि मे सँ एक गोट सिद्ध थिकाह काण्हपा या कृष्णपाद जे अपना केँ कपाली कहैत छथि । ओ एक गोट पद मे अपन गुरुक नाम जालंधरि देर्लनि अछि ।[3] राहुल सांकृत्यायन[4] द्वारा उद्धृत हिनकर पद में बौद्ध तन्त्रेटाक वर्णन अछि किन्तु शैव पद्धति केँ सेहो अपनौलनि जेना कि नाथ परम्पराक हिनक आदिनाथ कहल जाइछ हिनकर शिष्य मे कृष्णाचार, बुद्धज्ञानपा, तन्तिपा, भर्त्तृहरि तथा गोपीचन्द छलाह ।

जालंधर नाथक समयक प्रसंग मे यद्यपि कोनो यर्थाथ प्रभाण नहि अछि किन्तु तिलोपाक गुरु-परम्परा मे विजयपा, गुह्यपा, काण्हपा तथा जालंधरीपा अबैत छथि ।

एहि बातक स्पष्ट प्रमाण अछि जे नरोपा दीपंकरक गुरु छलाह । दीपंकर श्रीज्ञान सन् १०४२ ई० मे तिब्बत गेलाह । अतएव नरोपाक समय सेहो सएह भए सकैछ । नरोपाक शिष्य तिलोपा छलाह जे महिपालक समकालीन कहल जाइछ । महिपालक शासन काल १०३०ई० तक छल । अतएवतिलोपाक समय एगारहम शताब्दीक प्रथम चरण मानल जाए सकैछ । एहि तरहें जालन्धर नाथ तथा कृष्णाचारक समय दशम शताब्दीक उत्तरार्ध मानल जाए सकैछ ।

राजा गोपीचन्द केँ लामा तारनाथ चटगाँवक राजा कहैत छथि तथा हुनकानुसारें भरथरी (भर्त्तृहरि) क बहिन सँ विमलचन्द्रक विवाह भेल । अतः गोपीचन्द भरथरीक भगिनी पुत्र छलाह । भर्त्तृहरि मालवाक राजा कहल गेलाह अछि । एहि मे सँ गोपीचन्द जालंधरपादक शिष्य छलाह और भरथरी गोरखनाथक । तारनाथक अनुसार गोविन्दचंद्र तथा हुनकर पुत्र ललित चन्द्र सिद्धि केँ प्राप्त कएलनि ।

पूर्वी बंगाल मे गोविन्दचन्द नामक राजाक अस्तित्वक यथेष्ठ ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध अछि । जखन राजेन्द्र चोल पूर्वी भारत पर आक्रमण कएलनि अर्थात् १०२१ ई० मे तँ ओहि समय पूर्वी भारत मे महिपालक अतिरिक्त

---

१. हजारी प्रसाद द्विवेदी, नाथ संप्रदाय, पृ० ६
२. जालंधरो वसेनित्यमुत्तरापथमाश्रित ।
३. शाखि करिब जालंधरि पाय ।
४. पुरातत्व निवंधावली, पृ० १८३-८४

गोविन्द चन्द्र सेहो राज्य करैत छलाह। तामिल कथा मे गोविन्द चन्द्र के घनघोर वर्षाक बंगाल देशक नृपतिक रूप मे उल्लेख कएल गेल अछि जे हाथी पर चढ़ि राजेन्द्र चोल सँ युद्ध तँ कएल किन्तु पराजित भए गेलाह।[१]

डा० डी० सी० सेन[२] उपर्युक्त तिरूमलय अभिलेख मे वर्णित पराजित गोविन्दचन्द्र कें गोपीचन्द मानलनि अछि जे समीचीन प्रतीत होइछ।

एहि समय जयपुरक पावनाथ शाखाक योगी अपन परम्परा जालंधरनाथ और गोपीचन्द सँ जोड़ैत अछि। अनुश्रुतिक अनुसार बारह पन्थ मे सँ छौ पंथ तँ स्वतः शिव सँ प्रवर्तित अछि और बाँकी छौ पन्थ गोरखनाथ सँ। जालंधरीय सम्प्रदायक लोक गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित पावनाथी शाखाक नामे प्रख्यात अछि।[3]

मलिक मुहम्मद जायसी पद्मावत मे उल्लेख कएने छथि जे गोपीचन्द योगी भए कें कजरीवन (कदलीवन) मे गेलाह।

उपर्युक्त तथ्य सब सँ सेहो गोपीचन्दक ऐतिहासिकताक पुष्टि होइछ जनिकर समय दशम-एगारहम शताब्दी निश्चित कएल जाए सकैछ।

भाषा :—

गोपीचन्दक लोक-गाथा बंगला, असामी, मैथिली, पंजाबी, गुजराती, मराठी, नेपाली आदि भाषा मे रूपान्तरित पाओल जाइछ जकरा पर बंगलाक पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होइछ। असामी गाथाक निम्नलिखत अंश प्रस्तुत कएल जाइछः—

मानिकचन्द्र राजा छिल धार्मिक बड़ राजा।
मएनाक बिबा करिल तार नओ कुड़ि भारजा।
मएनाक बिबा करि राजार नापुरिल मनेर आस।
तारपर द्यावपुरेर पांच कन्या बिबा करि पुरिगेल मनेर हाविलास॥
आजि आजि कालि कालि बार वध्धर हेल।
द्यावपुरेर पांच कन्या डाहिनी मएना कन्दल लागिल।
देखिबार नापारि महाराज ब्यागल करिदेल
सेइ मएनाक घर बान्दि दिल फेरुसा नगेर॥

१. डा० नीलकण्ठ शास्त्री, दि चोल्स, पृ० २४७
२. साउथ इण्डियन इन्स्क्रीप्सन्स, भाग १, पृ० ९९
३. डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी, नाथ संप्रदाय, पृ० ७

एक गोट आन गाथाक अंश एहि प्रकारक अछि :—

मएनामति सिन्दुरमति तिलकचन्द्रेर वेटि ।
मएनामतिर विआओ हइल मानिक चन्द्रेर घरे ॥
सिन्दुरमतिर विआओ हईल णिलमनि राजार घरे ।
मएनाक विआओ करि राजा पंचास विआओकरे ॥
वुड़ा देखि मएनामतिक ब्यागल करि दिलै ।
महाराजा राज्य करि खाय पाटेर उपर ।
मएनार घर वान्दि दिले फेरुसार बन्दर ॥
महाराजा राज्य करि खाय पाटेर उपर ।
मएनामति चरखा काटि भात खाय वन्देरेर भितर ॥

उपर्युक्त गीत मे "चरखा काटि भात खाय वन्दरेर भितर" वाक्यांश मिथिला, बंगाल और असमक संस्कृतिक दिग्दर्शन करबैत अछि। स्त्री चरखा काटि के जीवन निर्वाह करबा मे अपन गौरव बुझैत छलीह जे अहुखन मिथिलाक लोकजीवन मे पाओल जाइछ। जँ कोनो कारणवश स्त्री-पुरुष मे खट-पट भेल तँ स्त्री द्वारा पति के चरखा काटि जीवन यापन करबाक धमकी साधारणतः देल जाइत अछि जे चरखाक व्यापकताक संगहि स्त्री समाजक शील एवं सरल मनोदशाक द्योतक थिक।

अदुना आ पदुनाक शोभा, कान्ति, दीप्ति आ माधुर्य कें रेति गोपीचन्द जखन योगी भए कें जाए लगलाह तखुनका विलाप एवंक्रमें गाथा मे पाओल जाइछ :—

हाय हाय काने रानी धुलाये लेटाय ।
अदुनाक रोदने पासान गलि जाय ॥
काने नगर वासी राजा परायल जाय ।
वाल वृन्द युवा काने आर शिशु माय ॥
रानीक क्रन्दने नदी उठि भेल सागर ।
पाइसाले काने अश्व सहित कुंजर ॥
शारि सुग्गा पक्षी काने नै करे आहार ।
दासी सभ काने राजा कहि हाहाकार ॥

गोपीचन्दक गाथाक सम्बन्ध नाथ सम्प्रदाय सँ अछि जे सर्वशून्य कें परमतत्व मानैत अछि, जे आदि अन्त सँ विहीन, गुण-दोष रहित, भावाभाव सँ रहित अछि, जकरा परमतत्व वा सर्वशून्य वा सहज सुख कहल जाइछ। एहि सुख कें प्राप्त करबाक हेतु प्रज्ञा और उपायक समागम अनिवार्य होइछ।

